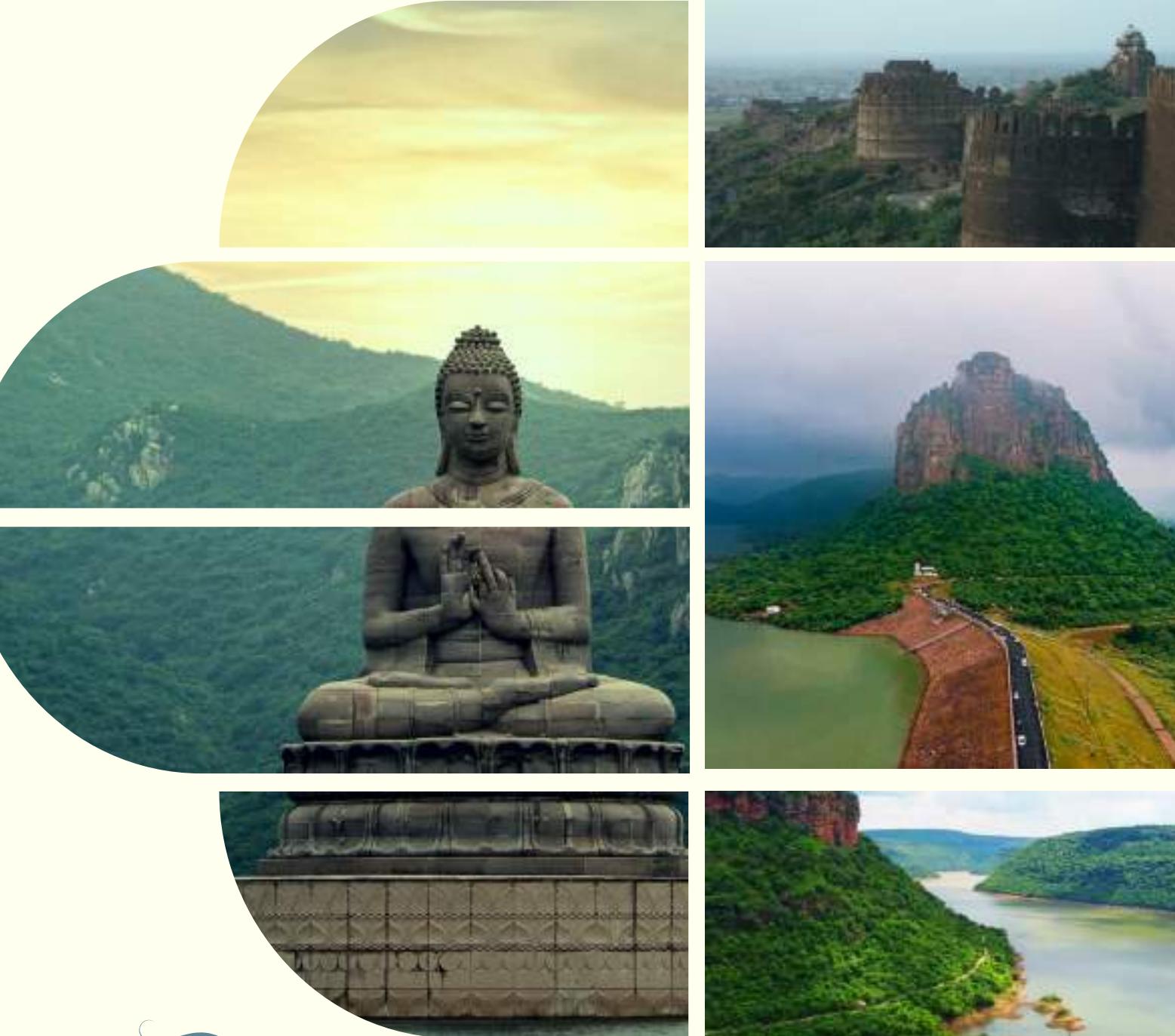


बिहार बाइरकोप

बिहार बाइरकोप

रजतपट पर बिहार की चमक



बिहार बाइरुक्तोप

रजतपट पर बिहार की चमक

प्रधान संपादक

श्री दयानिधान पाण्डेय, भा.प्र.से.

सचिव

कला, संस्कृति एवं युवा विभाग
बिहार सरकार

संपादक

श्री राहुल कुमार, भा.प्र.से.

महाप्रबंधक, बिहार राज्य फिल्म विकास एवं
वित्त निगम लिमिटेड, बिहार सरकार

© 2024 कला, संस्कृति एवं युवा विभाग, बिहार सरकार

संपादकीय टीम

श्री विनोद अनुपम, सलाहकार, बिहार राज्य फ़िल्म विकास एवं वित्त निगम लिमिटेड

श्री अविनाश उज्ज्वल, संचार विशेषज्ञ

डिजाइन एवं प्रिंटिंग

वर्मिलियन कम्प्युनिकेशन प्राइवेट लिमिटेड



श्री नीतीश कुमार

माननीय मुख्यमंत्री, बिहार

देश की संस्कृति को जन-जन तक पहुँचाने में सिनेमा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। सिनेमा लोगों के जीवन जीने के तरीके, परंपरा एवं ऐतिहासिक घटनाओं को समझने का अवसर प्रदान करता है और हमारी संस्कृति को समृद्ध बनाता है।

बिहार में सिनेमा को प्रोत्साहित करने के लिए राज्य सरकार द्वारा बिहार फिल्म प्रोत्साहन नीति, 2024 बनायी गयी है। इसके माध्यम से राज्य को फिल्म निर्माण का एक महत्वपूर्ण केन्द्र के रूप में विकसित करने में मदद मिलेगी। अपने वैभवशाली अतीत, पौराणिक धरोहरों, पुरातात्त्विक स्थलों, सांस्कृतिक विरासत और समृद्ध

परंपराओं के कारण बिहार में फिल्म निर्माण की असीम संभावनाएं हैं। राज्य में फिल्मों की शूटिंग से राज्य के पर्यटन स्थलों को भी देश दुनिया में नई पहचान मिलेगी।

फिल्म प्रोत्साहन नीति के क्रियान्वयन से राज्य में फिल्मों की शूटिंग को बढ़ावा देने से निजी क्षेत्र में निवेश आकर्षिक होगा। साथ ही फिल्म उद्योग से स्थानीय स्तर पर युवाओं को रोजगार मिलेगा और उनको कैरियर बनाने के अवसर मुहैया होंगे।

बिहार को फिल्म निर्माण केन्द्र के रूप में विकसित करने के लिए राज्य सरकार द्वारा कई कदम उठाये जा रहे हैं। बिहार फिल्म प्रोत्साहन नीति, 2024 के अंतर्गत फिल्मकारों को आर्थिक सहयोग के साथ आधारभूत संरचना के निर्माण हेतु भी सुविधायें दी जा रही हैं।

बिहार फिल्म कॉन्क्लेव, 2024 के सफल आयोजन हेतु शुभकामनायें।

नीतीश
(नीतीश कुमार)





श्री विजय कुमार सिन्हा

माननीय उप मुख्यमंत्री, बिहार

बिहार की सांस्कृति अनादि काल से पुष्टि और पल्लवित होती रही है। बिहार बुद्ध, अशोक और महावीर जैसे महापुरुषों की धरती रही है, जिन्होंने न केवल भारतीय इतिहास बल्कि वैश्विक सांस्कृतिक परंपराओं पर भी गहरा प्रभाव डाला है। यहाँ की सांस्कृतिक धरोहर और धार्मिक महत्व ने इसे सदियों से एक महत्वपूर्ण केंद्र बनाया है।

बिहार की मिट्ठी हमेशा से रचनात्मकता की भूमि रही है। सिनेमा की दुनिया में भी बिहार से जुड़े कलाकारों जैसे अभिनेत्री कुमकुम, अशोक कुमार, शिवेंद्र सिन्हा, शैलेन्द्र, सुहासिनी मुले, रौशन सेठ, सुशांत सिंह राजपूत ने फिल्म इंडस्ट्री में नए

प्रतिमान स्थापित किए हैं। इसके अलावा, संगीतकार चित्रगुप्त का योगदान भी अविस्मरणीय है, जिन्होंने भारतीय फिल्म संगीत को अमर धुनें दीं। वर्तमान में शत्रुघ्न सिन्हा, प्रकाश झा, मनोज वाजपेयी, संजय मिश्रा, नीरज पांडेय, पंकज त्रिपाठी जैसे कलाकारों ने भी अपनी प्रतिभा के बल पर अपने को स्थापित किया है। बिहार की धरती से जुड़े इन कलाकारों ने भारतीय सिनेमा को समृद्ध किया है, अभिनय, निर्देशन, और संगीत के क्षेत्र में नए मानकों की स्थापना की है।

राज्य सरकार, बिहार में सिनेमा के विकास को लेकर प्रतिबद्ध है। राज्य में बिहार फिल्म प्रोत्साहन नीति 2024 लागू हो गया है। इसके अंतर्गत फिल्म उद्योग एवं उससे जुड़े व्यवसाय और रोजगार को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहन/अनुदान पर व्यय होने वाली राशि राज्य सरकार द्वारा दी जाएगी। बिहार में पहले भी कई प्रसिद्ध फिल्मों की शूटिंग हुई है, यह नीति आने वाले समय में बड़ी संख्या में बिहार में फिल्मकारों को फिल्म निर्माण के लिए आकृष्ट करेगी। यह नीति, यहाँ के स्थानीय कलाकारों के लिए नए अवसर उपलब्ध करवाने के साथ ही बिहार की विभिन्न स्थानीय भाषाओं में बनने वाली फिल्मों को भी समृद्ध करेगी।

मुझे विश्वास है यह कॉफी टेबल बुक बिहार में सिनेमा की समृद्ध सिनेमा की परंपरा से परिचित कराने में समर्थ होगी।

हार्दिक शुभकामना

(विजय कुमार सिन्हा)



संदेश



श्री अमृत लाल मीणा, भा.प्र.से.

मुख्य सचिव, बिहार

बिहार अपनी प्राचीन सांस्कृतिक विरासत, समृद्ध इतिहास और सामाजिक विविधता के लिए विख्यात है। यहाँ की सांस्कृतिक धरोहर के साथ-साथ राज्य के सर्वांगीण विकास में भी हम लगातार प्रगति कर रहे हैं। बिहार फ़िल्म प्रोत्साहन नीति, 2024 का उद्देश्य सिनेमा के माध्यम से राज्य के विकास की गति को और अधिक तेज करना है। इस नीति के तहत राज्य में फ़िल्म निर्माण के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करने के साथ ही यह रोजगार के नए अवसर सृजित करने और स्थानीय व्यवसायों को भी बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

इसके अलावा, यह नीति बिहार की सांस्कृतिक और भाषाई विविधता को भी सिनेमा के माध्यम से संरक्षित और समृद्ध करेगी। आशा है यह कॉफी टेबल बुक बिहार की सिनेमा से जुड़ी उपलब्धियों, फ़िल्म निर्माण के लिए प्रमुख स्थलों और बिहार की फ़िल्म नीति से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारियों का एक समृद्ध दस्तावेज़ होगा, जो न केवल फ़िल्मकारों बल्कि सिनेमा में रुचि रखने वाले सभी लोगों के लिए प्रेरणादायक सिद्ध होगी।

(अमृत लाल मीणा)



संदेश



श्री चैतन्य प्रसाद, भा.प्र.से.

विकास आयुक्त, बिहार

बिहार विकास के पथ पर अग्रसर है, और इस प्रगति में सभी विभागों का समन्वय अहम भूमिका निभाता है। चाहे वह कृषि हो, शिक्षा, स्वास्थ्य, बुनियादी ढाँचा, या अब सिनेमा—सभी क्षेत्रों में हम बहु-आयामी-दृष्टिकोण के साथ काम कर रहे हैं, ताकि बिहार की प्रगति और तीव्र हो सके। बिहार फिल्म प्रोत्साहन नीति 2024, इस दिशा में एक अभिनव कदम है।

यह नीति न केवल फिल्मकारों को राज्य में फिल्म निर्माण के लिए आकर्षित करेगी, बल्कि राज्य में स्थानीय कलाकारों, तकनीशियनों, और अन्य संबंधित लोगों को भी

सशक्त अवसर प्रदान करेगी। इस नीति के माध्यम से राज्य में रोजगार, पर्यटन, तथा राजस्व की वृद्धि हो सकेगी।

इस कॉफी टेबल बुक के माध्यम से पाठक बिहार की फिल्म निर्माण में रही समृद्ध परंपरा, स्थानीय कलाकारों के योगदान और बिहार के मनमोहक स्थलों के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। इस सचित्र पुस्तिका के निर्माण से जुड़ी टीम को शुभकामनाएं।

(चैतन्य प्रसाद)





श्री दयानिधान पाण्डेय, भा.प्र.से.

प्रबंध निदेशक, बिहार राज्य फ़िल्म विकास एवं वित्त निगम लिमिटेड
बिहार सरकार

यह हर्ष का विषय है कि राज्य सरकार ने बिहार फ़िल्म प्रोत्साहन नीति, 2024 को मंजूरी दे दी है। फ़िल्म नीति के तहत फ़िल्मकारों को राज्य में फ़िल्मों के फ़िल्मांकन किये जाने पर कई प्रकार की वित्तीय सहायता/अनुदान का प्रावधान किया गया है। बिहार में फ़िल्म निर्माण के लिए अनुदान के रूप में अधिकतम चार करोड़ तक की राशि दी जाएगी, जो पूरे देश में सर्वाधिक है। यह सहायता सभी प्रकार की फ़िल्मों के निर्माण यथा फीचर फ़िल्म, वृत्तचित्र, टीवी धारावाहिक एवं वेब शृंखला के लिए दी जाएगी।

बिहार का विशेष रूप से चित्रण करने वाली फ़िल्मों, वृत्तचित्र, टीवी धारावाहिक एवं वेब सीरीज को अतिरिक्त प्रोत्साहन राशि की भी व्यवस्था इस नीति में है। इस नीति में भोजपुरी, मैथिली, मगही, अंगिका, बज्जिका जैसी भाषाओं में उत्कृष्ट फ़िल्मों के निर्माण के लिए 50 लाख रुपये तक की राशि अनुदान के रूप में दी जाएगी।

बिहार फ़िल्म प्रोत्साहन नीति 2024 के अंतर्गत फ़िल्म निर्माण एवं उससे जुड़े स्थानीय स्तर पर व्यवसाय और रोजगार को बढ़ावा देने हेतु नीति के अंतर्गत अनुदान, बिहार राज्य फ़िल्म विकास एवं वित्त निगम लिमिटेड के द्वारा दी जाएगी। मुझे उम्मीद है कि बिहार फ़िल्म प्रोत्साहन नीति 2024 बिहार में सिनेमा को और समृद्ध करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

निगम द्वारा बनाये जा रहे इस कॉफ़ी टेबल बुक के माध्यम से लोगों को बिहार के नैसर्गिक सौंदर्य वाले क्षेत्रों, राज्य में फ़िल्मों की रही समृद्ध परंपरा के साथ ही उन स्थानीय कलाकारों से परिचित होने का मौका मिलेगा, जिन्होंने भारतीय सिनेमा की दुनिया में अपना अप्रतिम योगदान दिया है।

(दयानिधान पाण्डेय)



संदेश



श्री राहुल कुमार, भा.प्र.से.

महाप्रबंधक, बिहार राज्य फ़िल्म विकास एवं वित्त निगम लिमिटेड
बिहार सरकार

देश में सिनेमा को जब आवाज मिल रही थी, तब 1931 में ही बिहार में भी सिनेमा ने डग भरने की शुरुआत की थी, जब देव (औरंगाबाद) के राजा जगन्नाथ प्रसाद सिंह किंकर ने छठ पर वृतचित्र के निर्माण के साथ ही बिहार में सिनेमा के सपने को साकार करने की शुरुआत की थी।

समय के साथ हमारे फ़िल्मकार, कलाकार, तकनीशियनों ने फ़िल्म उद्योग में अपनी उल्लेखनीय उपस्थिति ही दर्ज नहीं की, बल्कि बिहार की भाषाओं खास कर मैथिली, भोजपुरी में लगातार उल्लेखनीय फ़िल्में भी बनाई, जिसमें कई, राष्ट्रीय,

अंतर्राष्ट्रीय फ़िल्म महोत्सवों में प्रदर्शित हुईं एवं कुछ राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार से भी सम्मानित हुईं।

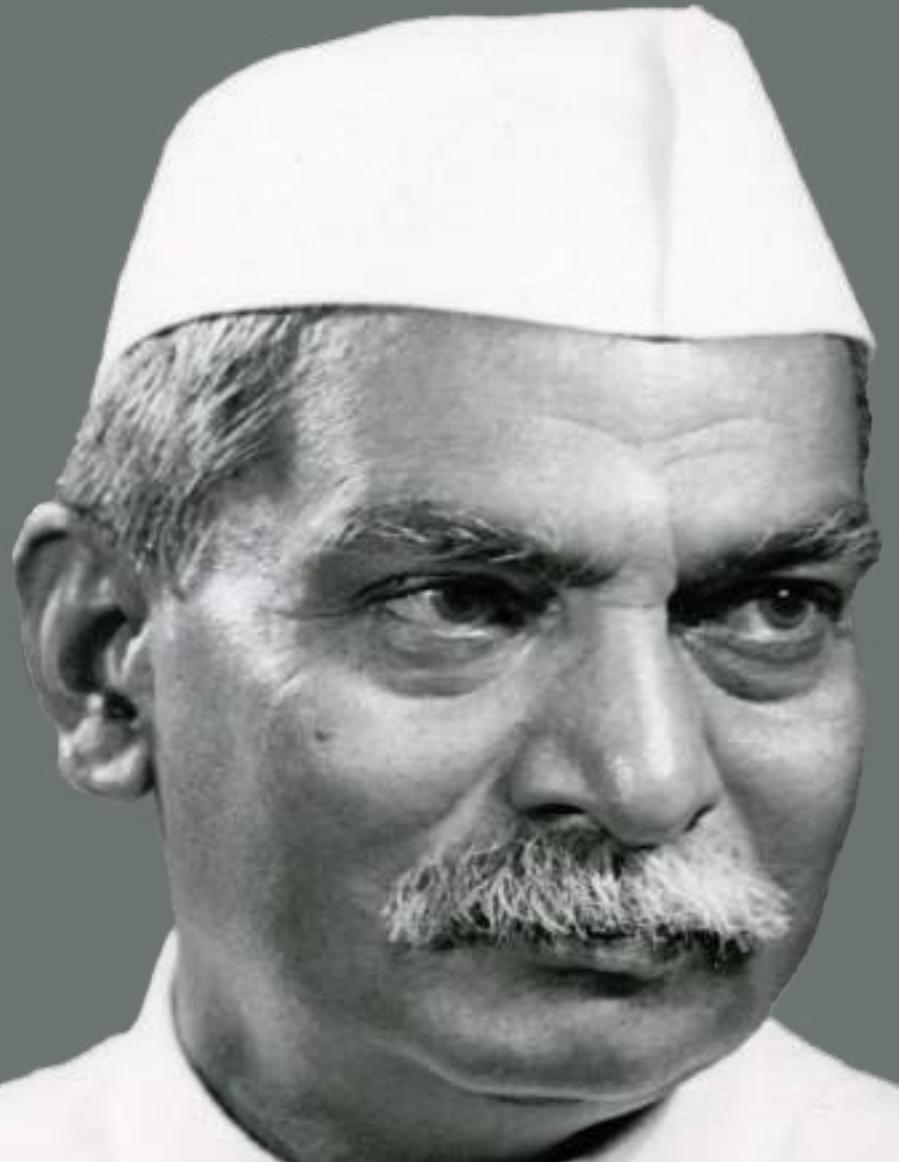
बिहार फ़िल्म प्रोत्साहन नीति 2024, राज्य के कलाकारों, फ़िल्मकारों के इसी समर्पण का सम्मान है। बिहार की कहानी या यहाँ के कलाकारों, तकनीशियनों के साथ फ़िल्म निर्माण पर नीति के अंतर्गत विशेष अनुदान की व्यवस्था की गई है। राज्य में फ़िल्म निर्माण की गतिविधियों को गति प्रदान करने के लिए आधारभूत संरचना के निर्माण पर भी नीति में विशेष प्रोत्साहन की व्यवस्था की गई है।

"बिहार बाईस्कोप", बिहार और सिनेमा के संबंधों को रेखांकित करने की एक छोटी सी कोशिश है। विश्वास है, यह आप सभी को बिहार से भावनात्मक रूप से जोड़ने में सफल होगी।

शुभकामनाएं!

राहुल कुमार
(Rahul Kumar)





डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

“मैं जानता हूं यहां बैठे आप तमाम लोग फिल्मों से संबंधित हैं, आपलोगों से मेरी भी एक मिन्नत है। शायद आप जानते होंगे कि मेरी मातृभाषा भोजपुरी है, हालांकि साहित्यिक तौर पर समृद्ध तो नहीं, लेकिन सांस्कृतिक विविधता से सनी बहुत ही प्यारी और संस्कारी बोली है। आप फिल्मकारों की पहल अगर इस ओर भी हो, तो सबसे ज्यादा खुशी मुझे होगी।”

(तत्कालीन बंबई में आयोजित फिल्मकारों की एक सभा में, 1950)

मील के पत्थर



बिश्वनाथ प्रसाद शाहाबादी

बिश्वनाथ प्रसाद शाहाबादी का जन्म 24 जनवरी, 1912 ई. को बिहार के पुराने शाहाबाद और आज के आरा जिला के बंधुचपरा गांव में हुआ था। यही शाहाबादी 1962 ई. में बनी पहली श्वेत श्याम भोजपुरी फिल्म 'गंगा मङ्गा तोहे पियरी चढ़ैबो' के निर्माण से आज भोजपुरी सिनेमा के जनक के रूप में जाने-माने और सराहे जाते हैं।

शाहाबादी की शिक्षा-दीक्षा पहले अपने गांव और फिर आरा शहर में हुई। इसे डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के सहज, सरल व्यक्तित्व, नजीर हुसैन के दूरदर्शी कृतित्व और विश्वनाथ शाहाबादी के पुरुषार्थ का ही सुखद परिणाम कहा जाना चाहिए कि 1962 ई. में भोजपुरी भाषा की पहली फिल्म 'गंगा मङ्गा तोहे पियरी चढ़ैयो' का निर्माण सम्भव हो पाया। इस सिल्वर जुबली फिल्म में कुमकुम, रामायण तिवारी, भगवान सिन्हा, टी. एन. सिन्हा और दया देवी जैसे कलाकार बिहार के ही थे।

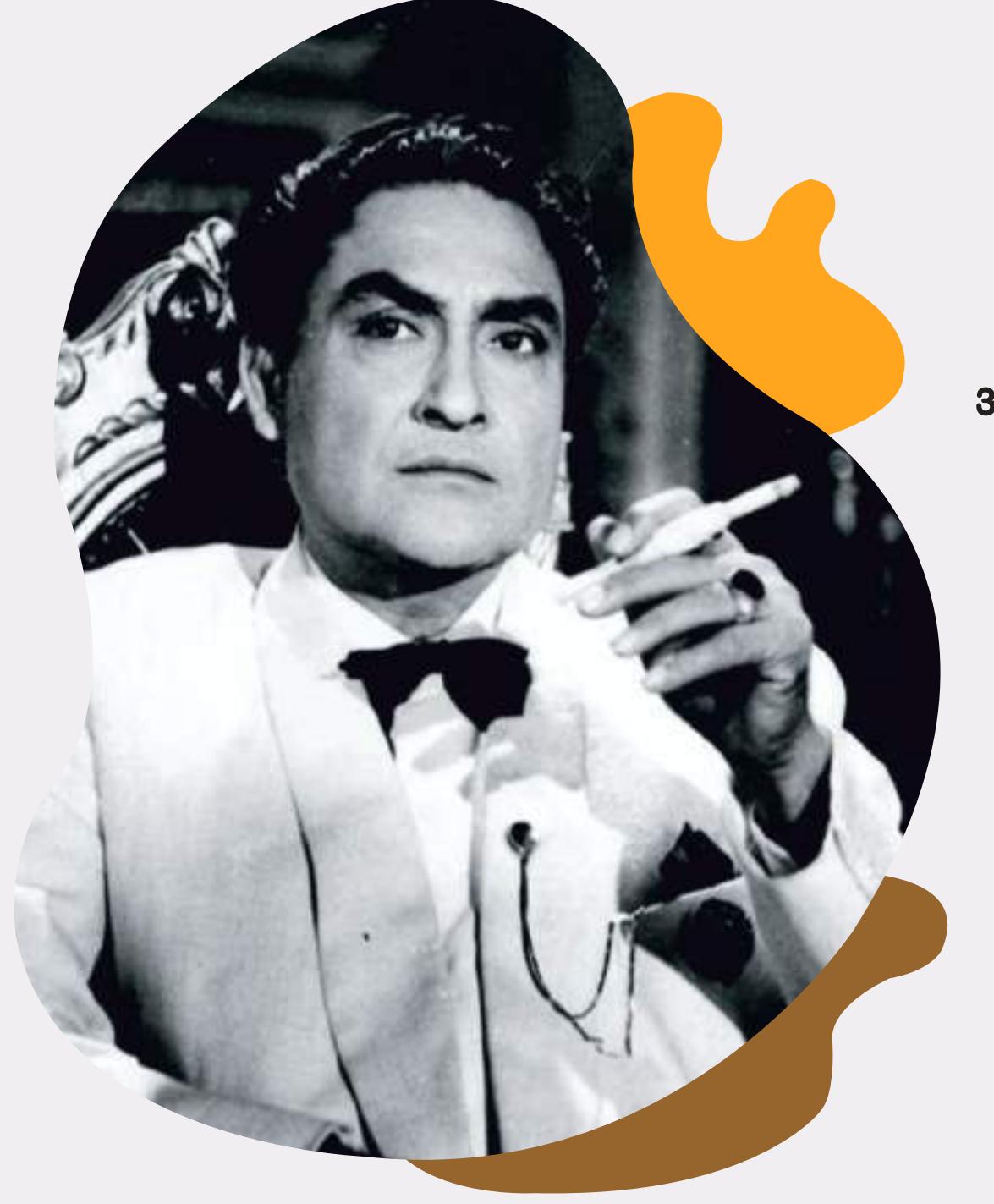
इनके अलावा इस फिल्म में अपने मधुर संगीत से प्राण फूंकने वाले संगीतकार चित्रगुप्त भी मूलतः बिहारवासी ही थे, जबकि गीतकार शैलेन्द्र के पूर्वज बिहार से सम्बन्धित रह चुके थे। अपने पांच पुत्रों में सबसे बड़े निर्मल के नाम पर स्थापित फिल्म निर्माण संस्था के बैनर तले 1966 ई. में शाहाबादी में दूसरी भोजपुरी फिल्म 'सोलहो सिंगार करे दुलहिनया' भी बनायी जो अपने समय के सुप्रसिद्ध चरित्र अभिनेता मोतीलाल की एक मात्र भोजपुरी फिल्म थी। शाहाबादी ने 1970 ई. में निर्मित फिल्म 'रुठा न करो' से हिन्दी फिल्मों के निर्माण क्षेत्र में प्रवेश किया। नन्दा, शशि कपूर, नाज और सुलोचना अभिनित इस फिल्म से पर्याप्त अनुभव ग्रहण करने के बाद उन्होंने 'गंगा धाम', 'गीत गंगा', 'ससुराल', 'तुलसी' और 'घर जमाई' जैसी साफ-सुथरी पारिवारिक फिल्मों का निर्माण कर निर्मल पिक्चर्स को फिल्म इण्डस्ट्री में एक मुकम्मल पहचान दिलायी। अन्ततः भोजपुरी फिल्म के इस जन्मदाता ने 13 जुलाई, 2000 को अपनी मूल कर्म स्थान गिरिडीह में ही अपनी अन्तिम सांस ली।

चित्रगुप्त

चित्रगुप्त का जन्म 16 नवम्बर, सन् 1917 को कमरेनी गाँव के शिक्षित संभ्रांत कायस्थ परिवार में हुआ था। बिहार के गोपालगंज जिले में उनकी प्रारंभिक एवं माध्यमिक शिक्षा-दीक्षा हुई। बाद में उच्च शिक्षा ग्रहण करने के लिए उन्होंने पटना विश्वविद्यालय, में दाखिला लिया और अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर की डिग्री हासिल की। चित्रगुप्त ने पं. शिव प्रसाद त्रिपाठी से विधिवत शास्त्रीय संगीत की शिक्षा प्राप्त की, उतना ही नहीं भातखंडे महाविद्यालय, लखनऊ से नोट्स मंगवा कर संगीत का नियमित अभ्यास किया करते थे। उन दिनों वह पटना विश्वविद्यालय में व्याख्याता के रूप में अध्यापन भी कर रहे थे, लेकिन इस संगीत साधक का मन यहाँ कहाँ लगने वाला था, फलस्वरूप व्याख्याता का पद त्याग कर सन् 1945 ई. में वे बम्बई चले गए। चित्रगुप्त उस समय के सभी फिल्मी संगीतकारों में सबसे अधिक पढ़े लिखे संगीतकार थे।

उन्हें पहली बार संगीत देने का मौका फिल्म 'लेडी रोबिनहुड' 1946 में मिला, जिसमें उन्होंने राजकुमारी के साथ दो सुमधुर गीत भी गाये। यहीं से चित्रगुप्त के फिल्मी सफर ने गति लेनी शुरू कर दी। 1962 में बनी पहली भोजपुरी फिल्म 'गंगा मैया तोहे पियरी चढ़ैबो' में चित्रगुप्त का संगीत एवं शैलेन्द्र का गीत बिहार और पूर्वोत्तर के हर उम्र के तबकों पर छाया रहा, 'सोनवा के पिजरा में बंद भइल हाय राम' (रफी) जैसे गीत आज भी आंखें गीली कर देते हैं। दूसरी और 'हंस के देखड़ तू एक बेरिया' तथा 'गोरक्षी पतरकी रे मारे गूलेलबा जियरा उड़ी जाय' (बलम परदेसिया) जैसे ही कानों में घुलता है कि मन तरंग आज भी मचल-मचल सा जाता है। 'जल्दी-जल्दी चल रे काहारा, सुरुज डूबे रे नदिया' (धरती मैया) जैसी लोकशैली में रचित संगीत चित्रगुप्त को बिहार की माटी का वास्तविक सपूत प्रमाणित करता है। चित्रगुप्त 'रोबिनहुड' 1946 से लेकर 'शिवगंगा' 1988 तक अपनी प्राकृतिक, सामाजिक सांस्कृतिक, सौदर्यबोध एवं शोधपरक धुनों की यात्रा तय करते करते 72 वर्ष की आयु में 14 जनवरी, 1991 (मकर संक्रांति) को अमरत्व प्राप्त कर गए।





अशोक कुमार

अशोक कुमार का जन्म 13 अक्टूबर, 1911 को बिहार के भागलपुर शहर के आदमपुर मोहल्ले के एक मध्य वर्गीय बंगाली परिवार में हुआ था। अशोक कुमार सभी भाई-बहनों में बड़े थे। उनका वास्तविक नाम कुमुद कुमार गांगुली था। फिल्मी जगत में 'दादामुरी' के नाम से लोकप्रिय अशोक कुमार के अभिनय सफर की शुरुआत किसी फिल्मी कहानी से कम नहीं थी। 1936 में बांबे टॉकीज स्टूडियो की फिल्म (जीवन नैया) के अभिनेता अचानक बीमार हो गए और कंपनी को नए कलाकार की तलाश थी। ऐसी स्थिति में स्टूडियो के मालिक हिमांशु राय की नजर आकर्षक व्यक्तित्व के धनी लैबोरेटरी असिस्टेंट अशोक कुमार पर पड़ी और उनसे अभिनय करने का प्रस्ताव दिया था।

यहीं से उनके अभिनय का सफर शुरू हो गया। उनकी अगली फिल्म 'अछूत कन्या' थी। 1937 में प्रदर्शित इस फिल्म में देविका रानी उनकी नायिका थीं। उस जमाने के लिहाज से यह महत्वपूर्ण फिल्म थी और इसी के साथ सामाजिक समस्याओं पर आधारित फिल्मों की शुरुआत हुई। 1939 में प्रदर्शित फिल्म कंगन, बंधन 1940 और झूला 1941 में इन्होंने अभिनेत्री लीला चिट्ठनिश के साथ काम किया। इन फिल्मों में उनके अभिनय को दर्शकों द्वारा काफी सराहा गया, जिसके बाद अशोक कुमार बतौर अभिनेता फिल्म इंडस्ट्री में स्थापित हो गए। अशोक कुमार को 1943 में बांबे टॉकीज की एक अन्य फिल्म किस्मत में काम करने का मौका मिला। इस फिल्म में अशोक कुमार ने फिल्म इंडस्ट्री के अभिनेता की पारंपरिक छवि से बाहर निकल कर अपनी एक अलग छवि बनाई। अशोक कुमार को तमाम पुरस्कारों से नवाजा गया, जिनमें भारतीय फिल्म जगत का शीर्ष अंवार्ड दादा साहब फालके पुरस्कार शामिल हैं। इस महान अभिनेता का 10 दिसंबर, 2001 को निधन हुआ।

शिवेन्द्र सिन्हा

शिवेन्द्र सिन्हा का जन्म 23 जनवरी, सन् 1933 को पटना में हुआ। शिवेन्द्र सिन्हा ने मैट्रिक तक की पढ़ाई मिलर हाई स्कूल, पटना से तथा अन्तर स्नातक, स्नातक एवं स्नातकोत्तर तक की पढ़ाई मनोविज्ञान विषय के साथ पटना विश्वविद्यालय के में पूरी की।

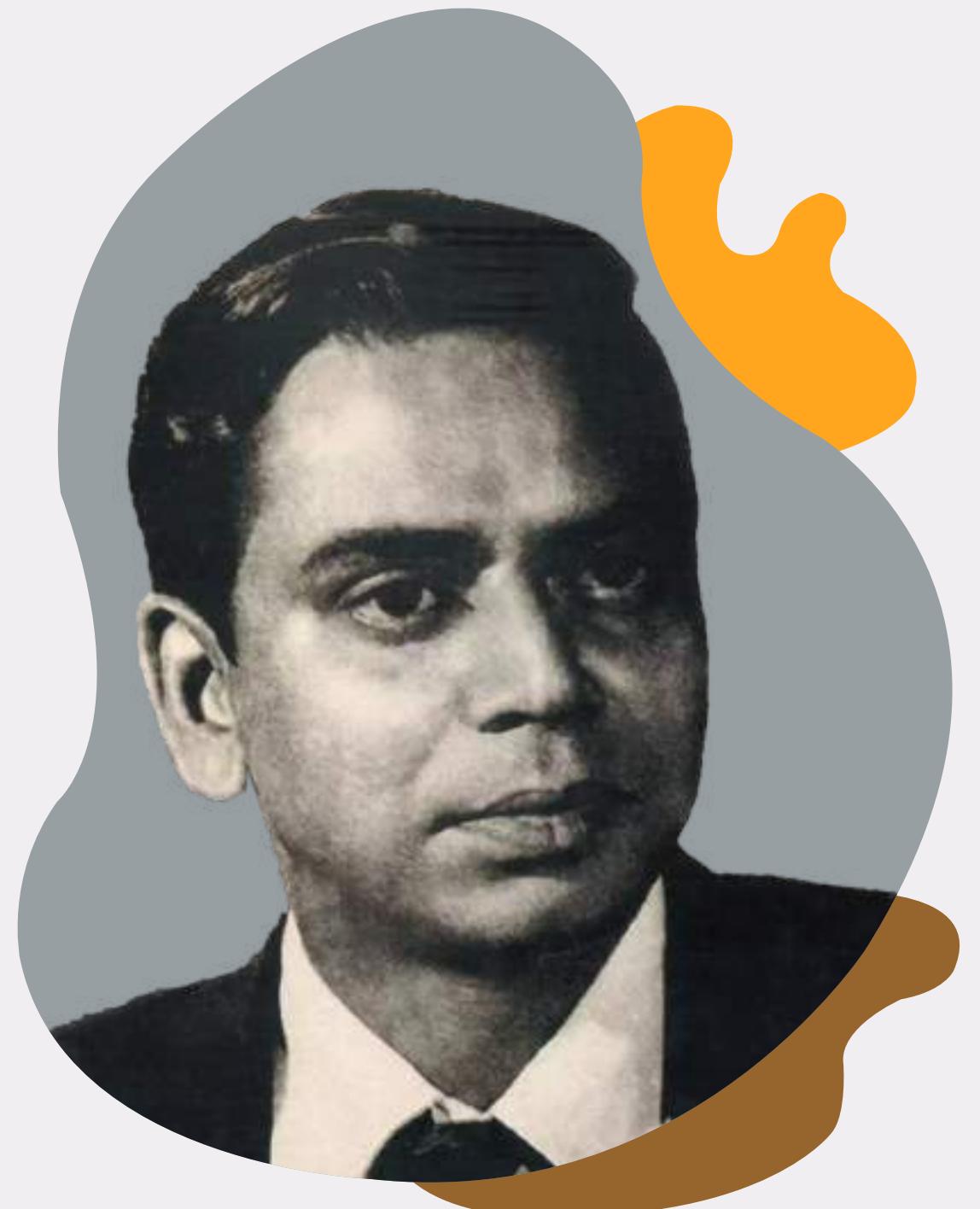
सन् 1955 में छात्रवृत्ति प्राप्त कर रायल एकेडमी ऑफ ड्रामेटिक आर्ट एण्ड ड्रामा (राडा), लंदन में अभिनय का प्रशिक्षण प्राप्त करने चले गए। वे 'राडा' कॉलेज के एक ऐसे अपवाद विद्यार्थी हुए जिन्होंने छः सत्रों की पढ़ाई मात्र पांच सत्रों में ही पूरी कर ली। उन्हें भारत सरकार सहित पश्चिम जर्मन सरकार एवं फ्रांस सरकार ने भी कई फेलोशिप से सम्मानित किया। वे ब्रिटिश ड्रामा बोर्ड के निर्वाचित प्रतिनिधि भी थे।



शिवेन्द्र सिन्हा संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) के भी टी.वी. कार्यक्रम निर्माता 1959 में ऑल इंडिया रेडियो के दूरदर्शन प्रभाग की स्थापना के समय इन्हें दूरदर्शन के प्रथम कार्यक्रम निर्माता की जिम्मेदारी सौंपी गई। बी.बी.सी. के बुलावे पर मशहूर ब्रिटिश अभिनेत्री 'जैम पत्तोरा बिसन' के साथ द अनटचेबल' नामक नाटक में बेमिसाल अभिनय किया। बी.बी.सी. के लिए इन्होंने बुद्ध के जीवन पर 'जर्नी इनटू इंटरसिटी' नामक नाटक भी लिखा जो विश्वविद्यालय हुआ। भारत में खासतौर से बच्चों के लिए इन्होंने एक फीचर फिल्म 'उड़नयू' बनाई।

1972 ई. बनी इनकी फिल्म 'फिर भी' को उस समय फिल्म समीक्षकों ने युग प्रवर्तक की संज्ञा दी थी। 'फिर भी' को निर्माण, निर्देशन अभिनय, फोटोग्राफी एवं पटकथा लेखन के साथ दर्जन भर पुरस्कार प्राप्त हुए, जिसमें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार का स्वर्ण कमल भी शामिल था। पुरस्कार प्राप्त करने वाले बिहार के ये पहले व्यक्ति थे।

बहुआयामी कला निपुण शिवेन्द्र सिन्हा का निधन लगभग 70 वर्ष की आयु में अप्रैल 2003 को दिल्ली में हो गया।



शैलेन्द्र

शैलेन्द्र की प्रतिष्ठा जितनी हिन्दी सिनेमा के गीतकार के रूप में रही, उससे कहीं अधिक साहित्य जगत में कवि के रूप में। उनके पिता कामकाज के सिलसिले में रावलपिंडी में रह रहे थे, जब इनका जन्म हुआ, लेकिन अपने पूर्वजों की भूमि आरा के अखिलयारपुर को कभी भूल नहीं पाए। अपनी डायरी में अपने बिहार से जुड़ाव को पूरी संवेदना से याद करते हैं। आश्चर्य नहीं कि अपनी जिंदगी की सारी कमाई न्यौछावर कर इन्होंने 'तीसरी कसम' जैसी फिल्म का निर्माण किया, और यह हिन्दी की ऐसी एकमात्र फिल्म बन कर रह गई जिसमें बिहार की संस्कृति अपने गौरवशाली स्वरूप में दिखती है।



कुमकुम

बिहार के शेखपुरा जिला अन्तर्गत हुसैनाबाद गांव में कुमकुम का जन्म 1940 ई. में नवाब सैयद मंजूर हसन खान की शरीके हयात बेगम खुर्शीद बानों की कोख से हुआ। जब छ: सात वर्ष की थीं तभी वह कुछ निजी वजहों से उनका परिवार अपने गांव हुसैनाबाद से कलकत्ता चला गया। वहाँ आरम्भिक शिक्षा के दौरान ही नृत्य के प्रति उनके आकर्षण को देख नृत्य की विधिवत शिक्षा ग्रहण करने हेतु उन्हें नृत्यगुरु पं. शम्भु महाराज के पास लखनऊ भेज दिया गया। उनके मार्गदर्शन में नृत्य की कथक शैली में प्रवीणता हासिल करने के बाद फिल्मों में अपना भविष्य तलाशने बेवी जैबुन्निसा 1952 ई. के आस-पास फिल्म नगरी बम्बई (अब मुम्बई) पहुंच गई। उस वक्त के परम्परानुसार फिल्मों में काम करने हेतु उन्हें एक नया नाम कुमकुम दे दिया गया।

मात्र 43 साल की उम्र में दुनिया को अलविदा कहने वाले शैलेन्द्र ने 171 हिन्दी एवं 6 भोजपुरी फिल्मों में लगभग 800 फिल्मी गीत लिखे, जिनमें प्रमुख फिल्में 'आवारा', 'श्री 420', 'संगम' और 'गाइड' जैसी कालजयी फिल्में शामिल हैं। राजकपूर जब 'बरसात' बना रहे थे तब इस फिल्म के लिए शैलेन्द्र ने दो गाने 'हमसे मिल तुम सजन' और 'पतली कमर है' लिखे। इसके बाद राजकपूर और शैलेन्द्र का संबंध हिन्दी सिनेमा में दोस्ती की मिसाल बन गया, कहते हैं शैलेन्द्र जब तीसरी कसम के लिए उनके पास गए तो मात्र एक रुपए पारिश्रमिक का मांग उन्होंने की। 'बरसात' से लेकर 'मेरा नाम जोकर' तक राजकपूर की सभी फिल्मों के थीम साँगा शैलेन्द्र ने ही लिखे। राजकपूर उन्हें कविराज कहकर बुलाते थे।

शैलेन्द्र का सम्मान महान गीतकार शायर साहिर लुधियानवी भी करते थे। शैलेन्द्र की प्रतिभा के सम्मान में साहिर ने सर्वश्रेष्ठ गीतकार का सम्मान लेने से मना कर दिया था। साहिर का मानना था कि उस वर्ष सबसे बेहतर गीत शैलेन्द्र ने फिल्म बंदिनी के लिखा था। गीत के बोल थे "मत रो माता लाल तेरे बहुतेरे"।

कुमकुम को सिनेमा के परदे पर अपनी नृत्य प्रतिभा दिखलाने का पहला मौका सोहराब मोदी ने अपनी ऐतिहासिक फिल्म 'मिर्जा गालिब' में दिया। कुमकुम की यह खूबी रही कि उन्होंने कभी अपने आप को एक खास फिल्मी सांचे में ढलने नहीं दिया। उनकी सर्वाधिक उल्लेखनीय फिल्में रहीं गुरुदत्त की 'मि.एण्ड मिसेज 55', 'कागज के फूल', 'प्यासा', रामानन्द सागर की 'आंखे', 'ललकार', 'गीत', महबूब खान की 'मदर इण्डिया' और 'सन ऑफ इण्डिया', राज खोसला की 'सी. आई. डी.'। 1962 ई. में जब पहली भोजपुरी फिल्म 'गंगा मङ्ग्या तोहे पियरी चढ़द़बो' के निर्माण की बात चली तो फिल्म के उत्प्रेरक लेखक और चरित्र अभिनेता नजीर हुसैन की पहली पसन्द वो ही रहीं। 'गंगा मङ्ग्या तोहे पियरी चढ़द़बो' के सुपर हिट हो जाने के बाद हिन्दी फिल्मों में काम करते हुए भी उन्होंने भोजपुरी फिल्मों में काम करना जारी रखा। 1962-67 ई. के उस दौर में उनकी अन्य सफल फिल्में थीं 'लागी नाहीं छूटे राम', 'भीजी' और 'गंगा'। इनमें से 'गंगा' का निर्माण खुद कुमकुम ने किया था।



गिरीश रंजन

गिरीश रंजन का जन्म 15 जून, 1934 ई. को पांची, शेखपुरा में स्व. अलख नंदन प्रसाद जी के घर हुआ। छः भाई-बहनों में सबसे बड़े गिरीश रंजन ने इंटरमीडिएट की पढ़ाई के बाद ही फिल्मी दुनिया को अपना कैरियर चुना। प्रसिद्ध फिल्मकार सत्यजीत रे, मृणाल सेन, तरुण मजूमदार, तपन सिन्हा आदि के साथ काम करते हुए उन्होंने सफलता की बुलंदियों को छुआ। प्रसिद्ध के शिखर पर वे बिहार लौट आए। 1965 में इन्होंने पहली महाफ़िल्म 'मोरे मन मितवा' का निर्देशन किया, जिसमें कुमारी नाज, सुजीत कुमार, छाया देवी और हेलन जैसे कलाकारों ने काम किया था।



शत्रुघ्न सिन्हा

पटना, बिहार में 9 दिसंबर, 1945 को जन्मे शत्रुघ्न सिन्हा को हिन्दी सिनेमा में बिहार की विशिष्ट पहचान बनाने का श्रेय दिया जाता है। हालांकि उनके पहले कुमकुम, रामायण तिवारी जैसे कलाकारों ने भी अपनी उपस्थिति दिखाई थी, लेकिन शत्रुघ्न सिन्हा पहले ऐसे कलाकार के रूप में उभरे, जिसने मुख्यधारा के सिनेमा में लोकप्रियता का शीर्ष ही हासिल नहीं किया, अपनी बिहारी पहचान भी बुलंद की।

पटना साइंस कॉलेज से शिक्षा ग्रहण करने के बाद शत्रुघ्न सिन्हा ने पुणे स्थित फिल्म एण्ड टेलीविजन इंस्टिट्यूट से अभिनय का कोर्स पूरा किया। देवआनंद ने अपनी फिल्म प्रेम पुजारी के लिए इन्हें चयनित किया। हिन्दी सिनेमा के ये पहले खलनायक माने गए, जिनके प्रवेश पर दर्शक तालियां बजाया करते थे।

इस फिल्म के लिए मोहम्मद रफी, मन्ना डे, मुकेश, आशा भौंसले ने गीत गाए थे। फिल्म की अधिकांश शूटिंग पटना मैडिकल कालेज में हुई थी। सन् 1975 में गिरीश रंजन ने कमलेश्वर की कहानी पर 'डाक बंगला' फिल्म का निर्माण एवं निर्देशन किया जिसे 'बेलग्रेड फिल्म फेस्टिवल' में आधिकारिक प्रविष्टि मिली, उल्लेखनीय है कि इस फिल्म का संपादन हृषिकेश मुखर्जी ने किया था। 1978 में इन्होंने बिहार की आम बोलचाल में 'कल हमारा है' का निर्माण किया, जिसमें भोजपुरी के महानायक कहे जाने वाले कुणाल को उन्होंने पहला अवसर दिया। यह फिल्म पूरी तरह बिहार के कलाकारों एवं तकनीशियों के सहयोग से बनी फिल्म थी। 1984 में इन्होंने हिन्दी में 'अपना भी कोई होता' का निर्देशन किया, लेकिन यह फिल्म सिनेमा घरों तक नहीं पहुंच पायी।

बाद के दिनों में इन्होंने अपनी प्रतिभा वृत्तचित्रों को समर्पित कर दी, और बिहार पर केंद्रित कई ऐतिहासिक महत्व की फिल्मों का निर्देशन किया। 'विरासत' एवं 'बिहार इतिहास' के पन्नों में 'इनकी चर्चित डाक्यूमेंट्री फ़िल्में हैं। 11 नवंबर 2014 को इनका निधन हो गया।

भारतीय सिनेमा के सबसे बड़े सितारों में से एक रजनीकांत ने अपने साक्षात्कार में स्वीकार किया था कि शत्रुघ्न सिन्हा का मैनेरिज्म उन्हें बहुत पसंद है। अपनी कुछ फिल्मों में रजनी ने उसे दोहराया भी किया है। दोनों ने 'असली नकली' नामक फिल्म में साथ काम भी किया है। सतर के दशक के मध्य में शत्रुघ्न ने अपने कैरियर को नायक के रूप में नई दिशा देने की कोशिश की। सुभाष घई निर्देशित फिल्म कालीचरण (1976) में वे दोहरी भूमिका में दिखाई दिए। 200 से भी अधिक फिल्मों में काम करने वाले शत्रुघ्न सिन्हा को अपने समय के सभी बड़े अभिनेताओं और निर्देशकों के साथ काम करने का अवसर मिला। एक ओर ऋषिकेश मुखर्जी के साथ कोतवाल साब, नरम गरम जैसी फिल्म में भी काम किया, तो दूसरी ओर तपन सिन्हा के साथ खासतौर पर बच्चों के लिए बनी फिल्म 'सफेद हाथी' में भी। धर्मेन्द्र, अमिताभ बच्चन, राजेश खन्ना के अलावा राजकपूर के साथ खान दोस्त में भी वे महत्वपूर्ण भूमिका में दिखे। उन्होंने बिहार की पृष्ठभूमि पर 'कालका' और 'बिहारी बाबू' नाम से दो फिल्मों का भी निर्माण किया। हिन्दी सिनेमा में उल्लेखनीय योगदान के लिए उन्हें कई लोकप्रिय सम्मान से ये भी सम्मानित किया गया।





प्रकाश झा

प्रकाश झा का जन्म पश्चिम चंपारण जिले के नरकटियागंज प्रखंड के शिकारपुर गांव में 27 फरवरी 1952 को हुआ था। इन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा कोडरमा जिले के सैनिक स्कूल तिलैया और बोकारो के केन्द्रीय विद्यालय से पूरी की। भारतीय फ़िल्म एवं टेलीविजन संस्थान से 1973 में उन्होंने एडिटिंग की पढ़ाई की। पहली फीचर फ़िल्म उन्होंने शैवाल की कथा पर 'दामुल' बनायी, हालांकि बन कर पहले 'हिप हिप हुर्रे' तैयार हो गई। दामुल (1984) ने हिन्दी सिनेमा में उनकी ही नहीं बिहार को भी एक नई पहचान दी। 1987 में इन्होंने विजय दान देथा की कहानी पर 'परिणति' बनाई। दूरदर्शन के लिए उन्होंने 'क्लासिकल डांस फ्रॉम इंडिया' सीरिज के अंतर्गत 13 फ़िल्में बनायीं। हालांकि इन्हें पहचान मिली "फेसेस आफ्टर द स्टॉर्म" से, जिसका निर्माण इन्होंने बिहारशरीफ में हुए दंगे के आधार पर 1984 में किया था।

इस फ़िल्म को सर्वश्रेष्ठ वृत्तचित्र का राष्ट्रीय सम्मान भी प्राप्त हुआ। आज प्रकाश झा के नाम विभिन्न श्रेणियों के दर्जन से ज्यादा राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार की सूची देख सहज ही अंदाजा लगाया जा सकता है कि वह शुरुआत कितनी महत्वपूर्ण थी। 1989 में एक बड़ी उम्मीद के साथ वे बिहार वापस आ गए। यहां अनुभूति का गठन किया। उसके जरिए बहुत सारे युवकों को सिनेमा के विभिन्न विधाओं में प्रशिक्षित करने की शुरुआत की। इसी दरम्यान उन्होंने बाबू कुँवर सिंह के जीवन पर धारावाहिक 'विद्रोह' का निर्माण किया, जिसमें बिहार के कलाकारों और तकनीशियनों को ही अवसर दिए गए। 1993 के बाद नई ऊर्जा और नए अनुभवों के साथ इन्होंने सिनेमा में एक बार फिर अपनी उपस्थिति दर्ज की। शुरुआत 'बंदिश' से हुई, 'मृत्युदण्ड' 'गंगाजल', 'अपहरण' 'राजनीति', आरक्षण, सत्याग्रह जैसी फ़िल्मों ने प्रकाश झा के नए स्वरूप से दर्शकों को परिचित कराया। जय गंगाजल, मट्टो की साईकिल, साढ़े की आंख जैसी फ़िल्मों के साथ अभिनेता के रूप में इन्होंने अपनी विशिष्ट उपस्थिति दर्ज की।

कुणाल सिंह

भोजपुरी सिनेमा के महानायक की संज्ञा पाने वाले कुणाल सिंह की अभिनय यात्रा हिन्दी सिनेमा से शुरू हुई थी। इनकी पहली फ़िल्म थी गिरीश रंजन की 'कल हमारा है' जिसे बिहार में बनी पहली फ़िल्म के रूप में याद किया जाता है। कुणाल ने अपने चार दशक के लंबे करियर में 270 से अधिक फ़िल्मों में अभिनय किया है। सिनेमा में उनके योगदान के लिए उन्हें 2012 में उन्हें राष्ट्रकवि दिनकर पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

कुणाल का जन्म 1955 में एक राजनीतिज्ञ परिवार में हुआ था। बचपन में उन्हें जनतंत्र जिंदाबाद नामक नाटक की स्क्रिप्ट पढ़ने के लिए कहा गया था, ऑडिसन में उनके खराब प्रदर्शन के लिए निर्देशक ने कहा कि "अभिनय उनके बस की बात नहीं है"। इस घटना के बाद उन्होंने अभिनेता बनने का फैसला किया।



कुणाल सिंह ने अपने अभिनय करियर की शुरुआत गिरीश रंजन द्वारा निर्देशित हिन्दी फ़िल्म 'कल हमारा है' (1980) से की। उस फ़िल्म में उन्होंने एक टांगा ड्राइव का किरदार निभाया था, उत्तर प्रदेश और बिहार के सिनेमाघरों में इसने अच्छा बिजनेस किया, इस फ़िल्म के बाद उन्हें भोजपुरी फ़िल्मों के कई ऑफर मिलने लगे। भोजपुरी में उनकी पहली बड़ी सफलता 'धरती मेया' (1981) थी, जिसमें उन्होंने एक मनमौजी युवक की भूमिका निभाई थी। उनकी सबसे बड़ी हिट 'गंगा किनारे मोरा गांव' 1983 में रिलीज हुई थी। वाराणसी के एक थिएटर में यह 16 महीने तक चली। उन्होंने भोजपुरी फ़िल्म गंगोत्री में अमिताभ बच्चन और मिथुन चक्रवर्ती के साथ अभिनय किया। 'धरती मझ्या, हमार भौजी, चुटकी भर सिंदुर, गंगा किनारे मोरा गांव, दूल्हा गंगा पार के, दगाबाज बलमा, हमार बेटवा, राम जइसन भइया हमार, बैरी कंगना, छोटकी बहू, घर-अंगना, साथ हमार-तोहार जैसी फ़िल्मों के साथ भोजपुरी सिनेमा को लोकप्रिय बनाने में कुणाल की महत्वपूर्ण भूमिका रही।





अखिलेन्द्र मिश्रा

ऐसा बहुत कम होता है कि किसी अभिनेता की पहचान उसके निभाए चरित्र से ही होने लगे, अखिलेन्द्र मिश्रा ऐसे ही अभिनेता है जिन्हें देख आज भी सबसे पहले 1994 में 'दूरदर्शन' के धारावाहिक चंद्रकांता में निभाए उनके 'चरित्र' क्रूर सिंह की याद आती है। आज भी उनके द्वारा बोला गया यहूँ उस दौर के दर्शकों की नास्टेलजिया में शामिल है।

5 जुलाई 1964 को सिवान के छोटे से गांव कुलवा, दौरंदा में जन्मे अखिलेन्द्र की प्रारंभिक शिक्षा महुआ (वैशाली) के गुरुकुल में हुई, राजेन्द्र कालेज छपरा से इन्होंने भौतिकी में स्नातक किया। गांव में ही नाटकों से जुड़े तो अभिनय की डोर इन्हें मुंबई तक खींच ले गई।

35 साल की अभिनय यात्रा में इन्होंने 100 से अधिक फिल्मों में हिन्दी सिनेमा के तमाम शीर्ष अभिनेताओं के साथ काम किया। लगान में अर्जन की, सरफरोश में मिर्ची सेठ की, द लीजेंड आफ भगत सिंह में चंद्रशेखर आजाद की भूमिका ने इन फिल्मों को विशिष्ट पहचान दिलायी।

अखिलेन्द्र मिश्रा की उल्लेखनीय फिल्मों में वीरजारा, रेडी, हलचल, गंगाजल, दो दूनी चार, अतिथि तुम कब जाओगे, काबिल जैसी सुपरहिट फिल्में शामिल हैं।

मनोज बाजपेयी

मनोज बाजपेयी का जन्म 23 अप्रैल 1969 को बिहार के पश्चिम चंपारण स्थित बेलवा गांव में एक साधारण किसान परिवार में हुआ था। मनोज के दिल में बचपन से ही एकिंटग को लेकर जबरदस्त क्रेज था। दिल्ली में पढ़ाई के दौरान उन्हें यूनिवर्सिटी में एकिंटग के लिए प्लेटफॉर्म भी मिला। इसके बाद उन्होंने दिल्ली में ही बेरी जॉन के साथ थिएटर करना शुरू कर दिया।

मनोज बाजपेयी ने अपना टीवी करियर दूरदर्शन पर प्रसारित होने वाले धारावाहिक स्वाभिमान के साथ शुरू किया था। मनोज ने अपना फिल्मी करियर 1994 में शेखर कपूर निर्देशित फिल्म 'बैंडिट क्वीन' से शुरू किया। लेकिन बॉलीवुड में उनको 1998 में राम गोपाल वर्मा की फिल्म 'सत्या' से उन्हें पहचान मिली।



इस फिल्म के लिए उन्हें सर्वश्रेष्ठ सह अभिनेता का राष्ट्रीय पुरस्कार भी प्राप्त हुआ। साल 1999 में आई फिल्म 'शूल' में उनके किरदार समर प्रताप सिंह के लिए उन्हें फिल्मफेयर का सर्वोत्तम अभिनेता पुरस्कार मिला। अमृता प्रीतम के मशहूर उपन्यास 'पिंजर' पर आधारित फिल्म पिंजर के लिए उन्हें एक बार फिर से राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। उन्हें फिल्मों से सम्बन्धित कई पुरस्कारों से नवाजा जा चुका है। 2022 में भी गुलमोहर के लिए राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार में विशेष उल्लेख से सम्मानित किया गया है। इसके पहले 67 वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार में भी भोसले के लिए सर्वश्रेष्ठ अभिनेता के पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। उन्हें राष्ट्रपति द्वारा पद्मश्री पुरस्कार से भी सम्मानित किया जा चुका है। मनोज बाजपेयी हिन्दी सिनेमा के साथ-साथ तेलुगु और तमिल फिल्मों में भी सक्रिय हैं। श्याम बेनेगल के निर्देशन में जुबैदा, यश चौपडा की वीरजारा के साथ गैंग आफ वासेपुर, भैया जी, जोरम, सत्या जैसी फिल्मों में मनोज बाजपेयी के अभिनय के विविध रंग देखने को मिलते हैं। फैमिली मैन, 'एक ही बंदा काफी है' जैसे वेब सीरीज में अपने उत्कृष्ट अभिनय से मनोज बाजपेयी ने विशिष्ट पहचान बनायी है।





नीरज पांडे

नीरज पांडे मूलतः बिहार के आरा के निवासी है। जहां से काम के सिलसिले में उनके पिता जी कोलकाता चले गए थे। अंग्रेजी के छात्र रहे, नीरज की पढाई लिखाई दिल्ली में हुई। 'ए वेडनेस डे' के लिए उन्हें निर्देशक की पहली फिल्म के रूप में इंदिरा गांधी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। फिल्म पर उनके द्वारा किए गए काम को आम दर्शकों के साथ आलोचकों ने भी खूब सराहा। इसी फिल्म के लिए फिल्मफेयर अवार्ड्स की सर्वश्रेष्ठ निर्देशक की श्रेणी में भी उन्हें नामांकित किया गया। उनकी दूसरी फिल्म स्पेशल 26 को भी पहली फिल्म की तरह दर्शकों के साथ साथ आलोचकों का भी प्यार मिला। उनकी तीसरी फिल्म थी 'बेबी' इसमें अक्षय कुमार मुख्य भूमिका में थे। यह फिल्म भी आलोचकों द्वारा प्रशंसित रही और इसने बाक्स आफिस पर भी अच्छा कारोबार किया।

उन्होंने रुस्तम में एक निर्माता के रूप में काम किया। पांडे ने 2016 में भारतीय क्रिकेटर महेंद्र सिंह धोनी पर आधारित बायोपिक फिल्म एमएस धोनी: द अनटोलेड स्टोरी का निर्देशन किया। उनके द्वारा निर्देशित औरों में कहां था दम भी अपनी खास शैली के कारण पसंद की गई। मार्च 2020 में, नीरज पांडे ने डिज्नी हॉटस्टार पर अपनी पहली वेब सीरीज स्पेशल ऑप्स प्रस्तुत और निर्देशित की। आठ एपिसोड की यह सीरीज, फ्राइडे फिल्मवर्क्स की डिजिटल शाखा, फ्राइडे स्टोरीटेलर्स का पहला प्रोडक्शन है, जिसे आलोचकों द्वारा बेहद पसंद किया गया। नीरज पांडे ने फ्राइडे स्टोरीटेलर्स के तहत 'खाकी: द बिहार चैप्टर' और 'द फ्रीलांसर' जैसी वेब सीरीज़ का निर्देशन और निर्माण भी किया।

नीरज ने वृत्तचित्र के क्षेत्र में भी कई अनूठे काम किए हैं, जिसमें डिस्कवरी के लिए बने सिक्रेट्स आफ सिनौली, सिक्रेट्स आफ कोहिनूर, बंदे में था दम जैसे वृत्तचित्र उल्लेखनीय हैं।

संजय मिश्रा

वध, कडवी हवा और आखिन देखी जैसी फिल्म में अपने अभिनय से विस्मित करने वाले संजय मिश्रा का जन्म 6 अक्टूबर 1963 को दरभंगा में हुआ था। संजय मिश्रा को अपने पिता की नौकरी के सिलसिले में कई शहरों को देखने और जानने का अवसर मिला। आज भी पटना की अपनी पहचान से गौरवान्वित होते हैं। संजय मिश्रा ने नई दिल्ली में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय में दाखिला लिया और 1989 में स्नातक किया। मिश्रा ने शाहरुख खान और दीपा साही के साथ फिल्म ओह डार्लिंग 'ये हैं इंडिया' (1995) से बॉलीवुड में अपनी शुरुआत की। उन्होंने कई फिल्मों में काम किया, जिनमें राजकुमार, दिल से..., वजूद, सत्या, ज्वालामुखी, जंग, और 'फिर भी दिल है हिंदुस्तानी' शामिल हैं।



वहीं, मिश्रा ने कई टेलीविजन शो में काम किया, जैसे चाणक्य, हम बंबई नहीं जाएंगे, ऑफिस ऑफिस, सीआईडी, लापतागांज। मिश्रा ने बॉलीवुड में कई तरह की भूमिकाएँ निभाई हैं। उन्होंने सत्या, जमीन, प्लान और चरसः ए जॉइंट एफर्ट जैसी फिल्मों में गंभीर भूमिकाएँ निभाई।

गोलमाल: फन अनलिमिटेड और धमाल जैसी फिल्मों में हास्य भूमिकाएँ भी निभाई। टेलीविज़न से ब्रेक लेने के बाद उन्होंने बंटी और बबली और अपना सपना मनी मनी जैसी समीक्षकों द्वारा प्रशंसित फिल्मों में काम किया। मिश्रा ने सारे जहां से महंगा... में मुख्य भूमिका निभाई। इसके बाद उन्होंने रजत कपूर द्वारा निर्देशित समीक्षकों द्वारा प्रशंसित फिल्म आँखों देखी में नायक की भूमिका निभाई। वह ऑल द बेस्ट: फन बिगिन्स और फंस गए रे ओबामा भूल भूलैया 2, बच्चन पांडे, होली काऊ और वध जैसी बड़े बैनर की फिल्मों की जरूरत बने रहे।

उन्होंने 2014 में आँखों देखी के लिए सर्वश्रेष्ठ अभिनेता और 2015 में फिल्मफेयर पुरस्कारों में मसान के लिए सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेता का पुरस्कार जीता। उन्हें 2016 में जी सिने अवार्ड्स में मसान के लिए सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेता (पुरुष) का पुरस्कार भी मिला।





विनीत कुमार

विनीत कुमार का जन्म 22 फरवरी 1957 को पटना में हुआ। इनकी प्राथमिक शिक्षा पटना में ही हुई। बाद में अभिनय के लिए ये राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय चले गए। ये हिन्दी, तेलुगु, तमिल और अंग्रेजी भाषा की फिल्मों में अपने काम के लिए जाने जाते हैं। उनकी हॉलीवुड फिल्मों में लिन कॉलिन्स के साथ रिटर्न टू राजापुर (मार्टिन शीन और मिशा बार्टन के साथ भोपालः ए प्रेयर फॉर रेन शामिल हैं। वे कई तेलुगु, कन्नड़ और भोजपुरी फिल्मों में भी नजर आ चुके हैं। उन्हें तेलुगु फिल्म विक्रमारकुड़ु में उनके काम के लिए आलोचकों की प्रशंसा मिली।



पंकज झा

पंकज झा का जन्म 1968 में बिहार के सहरसा में हुआ। झा बिहार में अपने गाँव में नुकङ्ग नाटकों का मंचन और अभिनय करते थे। झा ने राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय रंगमंडल में बतौर अभिनेता पाँच वर्ष कार्य किया। झा ने कला एवं शिल्प महाविद्यालय, पटना विश्वविद्यालय से ललित कला (पेंटिंग) में स्नातक की डिग्री की है। ये एक कुशल चित्रकार हैं और अब तक इनकी छह एकल चित्रकला प्रदर्शनियाँ हो चुकी हैं। अभिनेता के पास पुणे, महाराष्ट्र में एक कला स्टूडियो है, और वह अक्सर रंग, कैनवास और ढेर सारी रचनात्मकता के साथ रहने के लिए शहरी जीवन की नीरसता से दूर भागते हैं। पंकज झा पेशे से एक अभिनेता, सुप्रसिद्ध चित्रकार, कवि और फोटोग्राफर हैं। वह गाते भी हैं और अच्छे संगीतकार भी हैं।

वे कई हिन्दी फिल्मों में नजर आ चुके हैं। इनमें द्रोहकाल, कच्चे धागे, अक्स, ये दिल, सोच, शूल, रामप्रसाद की तेरहवीं, भोला इत्यादि शामिल हैं। मसान में उनके काम के लिए उन्हें सकारात्मक समीक्षा मिली और उनकी भूमिका के लिए उन्हें 'शानदार' कहा गया। मसान को 2015 के कान फिल्म फेरिट्वल में अन सर्टेन रिगार्ड सेक्शन में दिखाया गया और दो पुरस्कार जीते। इन्होंने कई वेबसीरिज में भी महत्वपूर्ण चरित्र निभाए हैं, जिसमें महारानी (1 और 2), गर्मी, निर्मल पाठक की घर वापसी उल्लेखनीय है। विनीत भारतीय टेलीविजन के जाने पहचाने चेहरे रहे हैं। इन्होंने अमूमन हरेक महत्वपूर्ण चैनलों के धारावाहिकों में महत्वपूर्ण काम किया है, जिसमें लापतागंज, चिडियाघर, सात फेरे, कभी कभी, स्वाभिमान प्रमुख हैं।

विनीत कुमार ने 2016 में 16वें भारतीय टेलीविजन अकादमी पुरस्कार (आईटीए) में जाना ना दिल से दूर के लिए सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का नकारात्मक भूमिका (जूरी) पुरस्कार जीता था।

इन्होंने 2001 में मीरा नायर की मॉनसून वेडिंग से हिन्दी फिल्मों में पदार्पण किया। उनकी फिल्मोग्राफी में अनुराग कश्यप की ब्लैक फ्राइडे गुलाल, सुधीर मिश्रा की हजारों ख्वाहिशें ऐसी, चमेली और मुंबई कटिंग, मनीष झा की मातृभूमि: ए नेशन विदाउट वुमेन, अनवर और ए वेरी वेरी साइलेंट फिल्म शामिल हैं। उन्होंने राम गोपाल वर्मा की कंपनी, डी और शिवा में भी अभिनय किया है। उनके अन्य उल्लेखनीय प्रदर्शनों में कॉमिक फिल्म बांके को क्रेजी बारात, तीन पत्ती, लाहौर और कई अन्य शामिल हैं। उनकी खास फिल्मों में उड़नछू, ग्लोबल बाबा, गन पे उन और रनिंग शादी डॉट कॉम शामिल हैं। इन्होंने राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार से सम्मानित मैथिली फिल्म मिथिला मखान में भी महत्वपूर्ण चरित्र निभाया है। पंचायत वेब सीरीज में विधायक जी के किरदार से ये घर-घर में पहचाने जाने लगे हैं।



विनय पाठक

हिन्दी सिनेमा में अपने बहुमुखी अभिनय के लिए जाने पहचाने विनय पाठक का जन्म 27 जुलाई 1968 को बिहार के आरा में हुआ था। मनोरंजन उद्योग में विनय पाठक की यात्रा थिएटर से शुरू हुई, जहाँ उन्होंने अपने अभिनय कौशल को निखारा और पहचान हासिल की। विनय स्टोनी ब्रुक में स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ न्यूयार्क गए और कई नाटकों में काम किया है। उन्होंने कई फ़िल्मों में छोटी भूमिकाएं किए लेकिन वे फ़िल्म खोसला का घोसला में नोटिस किए गए। उसके बाद भेजा फ्राई में उनकी परफॉर्मेंस को खूब वाहवाही मिली। 1999 में उन्होंने जी टीवी की पापुलर सीरीज हिप हिप हुर्रे, में विनीत सर, एक इंगिलिश टीचर, का महत्वपूर्ण किरदार निभाया। उन्होंने अपने दोस्त रणवीर शौरी के साथ चैनल वी के शो ओय की एंकरिंग की। इसके अलावा भी पाठक ने टीवी पर कई शों किए।

बाद में उन्होंने टेलीविजन में कदम रखा और "हिप हिप हुर्रे" जैसे शो से सफलता पाई, जहाँ उनकी स्वाभाविक अभिनय शैली और कॉमेडी टाइमिंग स्पष्ट रूप से सामने आई।

हिन्दी सिनेमा में उनकी सफलता समीक्षकों द्वारा प्रशंसित फ़िल्म "भेजा फ्राई" (2007) से मिली, जिसका निर्देशन सागर बल्लारी ने किया था। विनय पाठक ने "खोया खोया चांद" (2007), "दसविदानिया" (2008) और "रब ने बना दी जोड़ी" (2008) जैसी फ़िल्मों में उल्लेखनीय अभिनय किया, जिसमें उन्होंने गहराई और प्रामाणिकता के साथ विविध चरित्रों को चित्रित करने की अपनी क्षमता का प्रदर्शन किया। विशेष रूप से "दसविदानिया" में, जहाँ उन्होंने अपनी इच्छा सूची को पूरा करने वाले एक असाध्य बीमार व्यक्ति की भूमिका निभाई, उन्हें उनके सूक्ष्म चित्रण के लिए आलोचकों की प्रशंसा मिली। कॉमेडी और ड्रामा में अपने कौशल के अलावा, विनय पाठक ने सस्पेंस थ्रिलर "जॉनी गद्दार" और रोमांटिक ड्रामा "अंतरद्वंद" सहित विभिन्न शैलियों में अपनी बहुमुखी प्रतिभा का प्रदर्शन किया है।

पंकज त्रिपाठी

पंकज त्रिपाठी का जन्म 5 सितंबर 1976 को बिहार के गोपालगंज के बेलसंड गांव में हुआ था। पटना में पढ़ाई के दौरान ही पंकज रंगमंच से जुड़े, और अपने समर्पण से अलग पहचान बनायी। यहाँ से उन्होंने अभिनय के अध्ययन के लिए दिल्ली के राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय में दाखिला लिया। पंकज ने हिन्दी सिनेमा में अपनी शुरुआत साल 2004 में आई फ़िल्म 'रन' के जरिए की थी। इसके बाद सालों तक वे छोटे-मोटे रोल करते रहे। उन्हें सबसे पहले बड़ी और खास पहचान मिली, साल 2012 की फ़िल्म 'गैंग्स ऑफ वासेपुर' से। और फिर उन्होंने पीछे मुड़ कर नहीं देखा। सुल्तान की भूमिका से वे लोगों के दिल दिमाग पर छा गए।



उनके लिए खास तौर पर भूमिकाएं लिखी जानें लगी। फुकरे, निल बटे सन्नाटा, बरेली की बर्फी, फुकरे रिटर्न्स, और सुपर 30 जैसी फ़िल्मों में पंकज अलग अलग रूपों में दिखे और अपने अभिनय की विशिष्टता से रुकरु होने का अवसर दिया। गुड़गांव में वे मुख्य भूमिका में दिखे। न्यूटन में एक प्रमुख भूमिका में दिखाई दिए, फ़िल्म का प्रीमियर 67वें बर्लिन अंतर्राष्ट्रीय फ़िल्म महोत्सव में हुआ। न्यूटन ने 2017 में हिन्दी में सर्वश्रेष्ठ फीचर फ़िल्म का राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार जीता। स्त्री और फिर स्त्री 2 हिन्दी की सफलतम फ़िल्मों में शुमार की जाती है, जिसमें पंकज की महत्वपूर्ण भूमिका है।

गुंजन सक्सेना: द कारगिल गर्ल, लूडो, कागज, मिमी, '83, शेरदिल, मैं अटल हूं, ओ एम जी 2 जैसी फ़िल्मों को पंकज की उपस्थिति से विशिष्ट पहचान मिली। मिमि के लिए एक बार फिर राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार से उन्हें सम्मानित किया गया। पंकज कई वेब सीरीज़ का भी हिस्सा रहे हैं, जिनमें सिक्रेट गेम्स, मिर्जापुर, क्रिमिनल जस्टिस, क्रिमिनल जस्टिस: बिहाइंड क्लोज़ड डोर्स, क्रिमिनल जस्टिस: अधूरा सच शामिल हैं।



मनोज तिवारी

मनोज तिवारी एक भारतीय अभिनेता, गायक, टेलीविजन व्यक्तित्व हैं जिन्होंने मुख्य रूप से भोजपुरी फ़िल्मों में काम किया है। इनका उपनाम मृदुल है, जो इनके आवाज और व्यवहार से प्रभावित होकर गुलशन कुमार द्वारा इन्हें दिया गया था। 1 फरवरी 1971 को मनोज तिवारी का जन्म कैमूर के अतरवलिया गांव में हुआ। उन्होंने 2004 से 2015 तक 40 से अधिक फ़िल्मों में अभिनय किया है। उनकी पहली फ़िल्म ससुरा बड़ा पइसावाला एक बड़ी हिट और भोजपुरी सिनेमा के लिए एक महत्वपूर्ण मोड़ थी। उन्होंने इस सफल फ़िल्म के बाद दरोगा बाबू आई लव यू और बंधन टूटे ना जैसी फ़िल्में कीं, दोनों ने भोजपुरी सिनेमा के बाजार को एक नया विस्तार दिया।

2006 में रिलीज़ हुई धरती कहे पुकार के में मनोज तिवारी ने श्रावणी मुखर्जी और अजय देवगन के साथ अभिनय किया। फ़िल्म बॉक्स ऑफिस पर

सफल रही और आलोचकों ने सकारात्मक समीक्षा की। 2008 में, उन्होंने मिथुन चक्रवर्ती के साथ भोले शंकर में अभिनय किया, जिसे भोजपुरी फ़िल्म के लिए सबसे बड़ी ओपनिंग मानी जाती है। कहानी बेरोजगारी के मुद्दों और भूमिगत माफिया की गंदी दुनिया के इर्द-गिर्द घूमती है। फ़िल्म को गैर-भोजपुरी भाषी दर्शकों से अभूतपूर्व प्रतिक्रिया मिली और यह नेपाल, फ़िजी, मॉरीशस और गुयाना जैसे विदेशी बाजार में एक साथ रिलीज़ होने वाली पहली फ़िल्म थी।

मनोज तिवारी ने 75 से अधिक भोजपुरी फ़िल्मों में तथा दो हिन्दी फ़िल्म में मुख्य भूमिका निभायी है। इन्होंने भोजपुरी और हिन्दी में 4000 से अधिक गीत गाए हैं, जिसमें गैंगआफ वासेपुर का कालजयी गीत जिय हो बिहार के लाला भी शामिल है।



रौशन हुआ बिहार



तीसरी कसम

बिहार की माटी से जुड़े फिल्मकार की तीसरी कसम में बिहार की संस्कृति अपने पूरे उठान पर दिखती है। फणीश्वर नाथ रेणु की कहानी 'मारे गए गुलफाम' पर बनी इस फिल्म की शूटिंग रेणु के गांव औराही हिंगना और पूर्णिया के आसपास के क्षेत्रों में हुई थी। इस फिल्म की शूटिंग के लिए उस समय हिन्दी सिनेमा के शीर्ष कलाकार राजकपूर और वहीदा रहमान भी आए थे। हिन्दी सिनेमा को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने में इस फिल्म की अहम भूमिका मानी जा सकती है।



गाँधी

महात्मा गांधी के जीवन में बदलाव की महत्वपूर्ण शुरुआत बिहार के चंपारण से मानी जाती है। जाहिर है महात्मा गांधी के जीवन पर बनी गांधी फिल्म बिहार के बगैर पूरी नहीं हो सकती थी। फिल्म के निर्देशक रिचर्ड एटनबरो मोतिहारी के वास्तविक लोकेशन पर फिल्म शूट करना चाहते थे, लेकिन 1981 में, जब गांधी सेतु का निर्माण नहीं हुआ था, गंगा नदी पार करने में फिल्म की बड़ी टीम की असुविधा को देखते हुए पटना के कलेक्ट्रेट भवन में शूटिंग की गई। कलेक्ट्रेट के ऊपर काल के रिकॉर्ड कक्ष को 'मोतिहारी जेल' में तब्दील किया गया, जबकि ब्रिटिश काल के जिलाधिकारी कार्यालय को अदालत कक्ष के दृश्य के तौर पर फिल्माया गया। इस फिल्म का एक अहम दृश्य कोइलवर पुल के नीचे भी फिल्माया गया था, जिसके बाद महात्मा गांधी पूरे कपड़े पहनना त्याग देते हैं।





बन्दी

बंदी हिन्दी सिनेमा के इतिहास की कालजयी फिल्म के रूप में याद की जाती है, उल्लेखनीय है कि इस फिल्म के नायक अशोक कुमार का जन्म बिहार में ही हुआ था, बंदी के कई गाने और दृश्य भागलपुर और साहेबगंज के गंगा नदी किनारे शूट किये गए थे। इस फिल्म के सभी गीत आज भी लोकप्रिय हैं, जिसमें "मेरे साजन है उसपार मैं मन मार" ...जिसे एस डी बर्मन ने गाया था, कि शूटिंग भागलपुर से 70 किलोमीटर पूर्व साहेबगंज के जहाज घाट पर हुई थी, जहाँ से उस पार समय मनिहारी घाट के लिए जहाज चलता था। इस फिल्म के कुछ दृश्य भागलपुर जेल और भागलपुर के ही बरारी घाट पर भी फिल्माए गए थे।



जानी मेरा नाम

जानी मेरा नाम 1970 में विजय आनंद के निर्देशन में बनी थी। यह अपने दौर की सबसे सफल फिल्म के रूप में शुमार की जाती रही। फिल्म के कुछ महत्वपूर्ण दृश्य और एक गीत बिहार के राजगीर, नालंदा तथा आसपास के क्षेत्रों में फिल्माया गया था। फिल्म में नालंदा रेलवे स्टेशन, राजगीर का रोप वे, शांति स्तूप और नालंदा के पुरावशेष विस्तार से दिखाई देते हैं। इस फिल्म की शूटिंग के लिए देवआनंद, हेमा मालिनी के साथ कई चरित्र अभिनेता भी बिहार आए थे।





दामुल

दामुल प्रकाश झा की पहली फीचर फिल्म थी। इसके पहले वृत्तचित्र फेसेस आफ्टर द स्टॉर्म के लिए राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार मिल चुका था। 1985 में बनी यह फिल्म कथाकार शैवाल की कहानी पर आधारित थी, जिसमें बिहार के ग्रामीण समाज का यथार्थ प्रदर्शित होता है। इस फिल्म के लिए मनोहर सिंह, अन्नू कपूर, दीपि नवल जैसे कुछ महत्वपूर्ण कलाकारों के अतिरिक्त सभी कलाकार बिहार से लिए गये थे। फिल्म की पूरी शूटिंग बेतिया के आस पास के गांव में हुई। दामुल को सर्वश्रेष्ठ फिल्म के राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।



कल हमारा है

कल हमारा है, बिहार में बिहार के कलाकारों के साथ बनी पहली फिल्म मानी जाती है। इस फिल्म की विशेषता इसकी भाषा भी ती, जिसमें बिहार खासकर पटना में आम बोलचाल की भाषा का उपयोग किया गया था। फिल्म में मुख्य भूमिका कुणाल सिंह ने निभायी थी, यह उनकी पहली फिल्म थी। पूरी फिल्म की शूटिंग पटना और आस पास के गांवों में हुई थी। सत्यजीत रे के साथ काम की शुरुआत करने वाले गिरीश रंजन इस फिल्म के बाद पूरा जीवन बिहार में ही फिल्म बनाते बिताए।



मिथिला मरवान

मिथिला मरवान पहली फिल्म थी, जिसे सर्वश्रेष्ठ मैथिली फिल्म के पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। निर्देशक नितिन चंद्रा ने इस फिल्म को मिथिला के वास्तविक लोकेशनों पर शूट किया, जिसमें दरभंगा, सहरसा, सुपौल, कटिहार जैसे स्थान शामिल हैं। फिल्म में पोखर और मरवाना के रूप में मिथिला की पहचान भी दिखती है, तो मिथिला की समृद्ध के रूप में राजमहल की विरासत भी। फिल्म में मरवाना बनने की पूरी प्रक्रिया विस्तार से दिखायी गई थी।



अंतर्द्वंद्व

अंतर्द्वंद्व को 2009 के राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार में सामाजिक मुद्दों पर बनी सर्वश्रेष्ठ फिल्म का पुरस्कार मिला था। फिल्म का अधिकांश भाग मुजफ्फरपुर के कांटी और आस पास के क्षेत्रों में शूट किया गया था। फिल्म के सीन के लिए निजी बंगलों, पुराने घरों, स्कूलों के साथ थाना के भवन का भी उपयोग किया गया था। फिल्म के एक मुख्य पात्र अखिलेन्द्र मिश्रा बताते हैं कि स्टार्ट टू फिनिश लगभग 30 दिनों की शूलटग हमने की, और जिस तरह बिहार के लोगों ने फिल्म की शूटिंग में हर कदम पर सहयोग किया, वह एक सुखद अनुभव था।





गुटरु गुटरगूं

प्रतीक शर्मा निर्देशित गुटरु गुटरगूं की पूरी शूटिंग जहानाबाद के पंडुई और पटना शहर में हुई थी। यह हिन्दी की पहली फिल्म मानी जाती है जो खुले में शौच ऐसे विषय को पूरे साहस के साथ चित्रित कर रही थी। इस फिल्म में मुख्य भूमिका अस्मिता शर्मा और पंचायत से चर्चित हो चुके अभिनेता बुल्लु कुमार ने निभायी थी। प्रतीक शर्मा बताते हैं कि फिल्म काफी अच्छे वातावरण में पंडुई गांव के वास्तविक लोकेशन पर शूट हुई थी। इस पूरे फिल्म में भीड़ के शॉट में भी गांव के लोग ही शामिल थे।





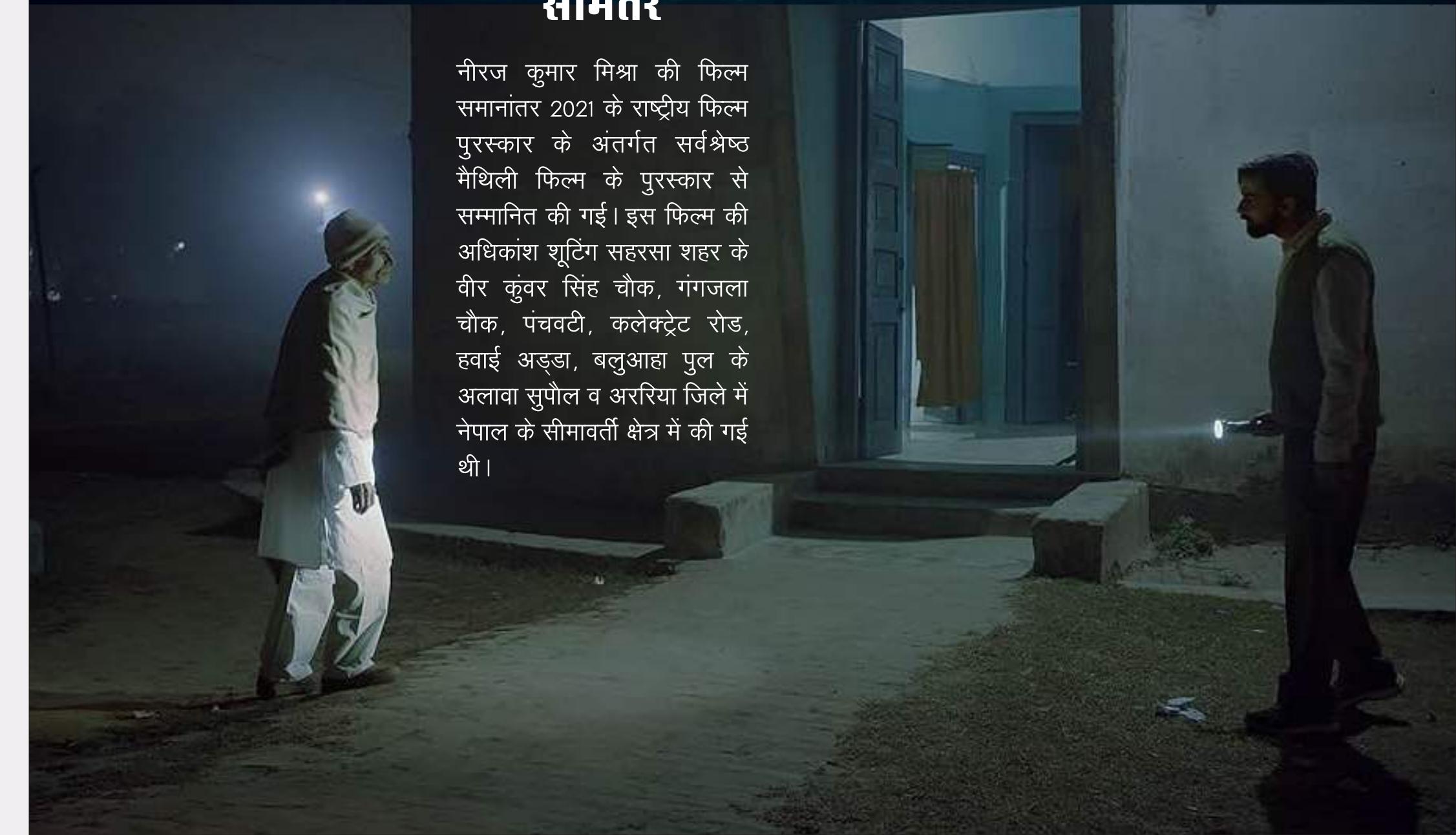
धुईन

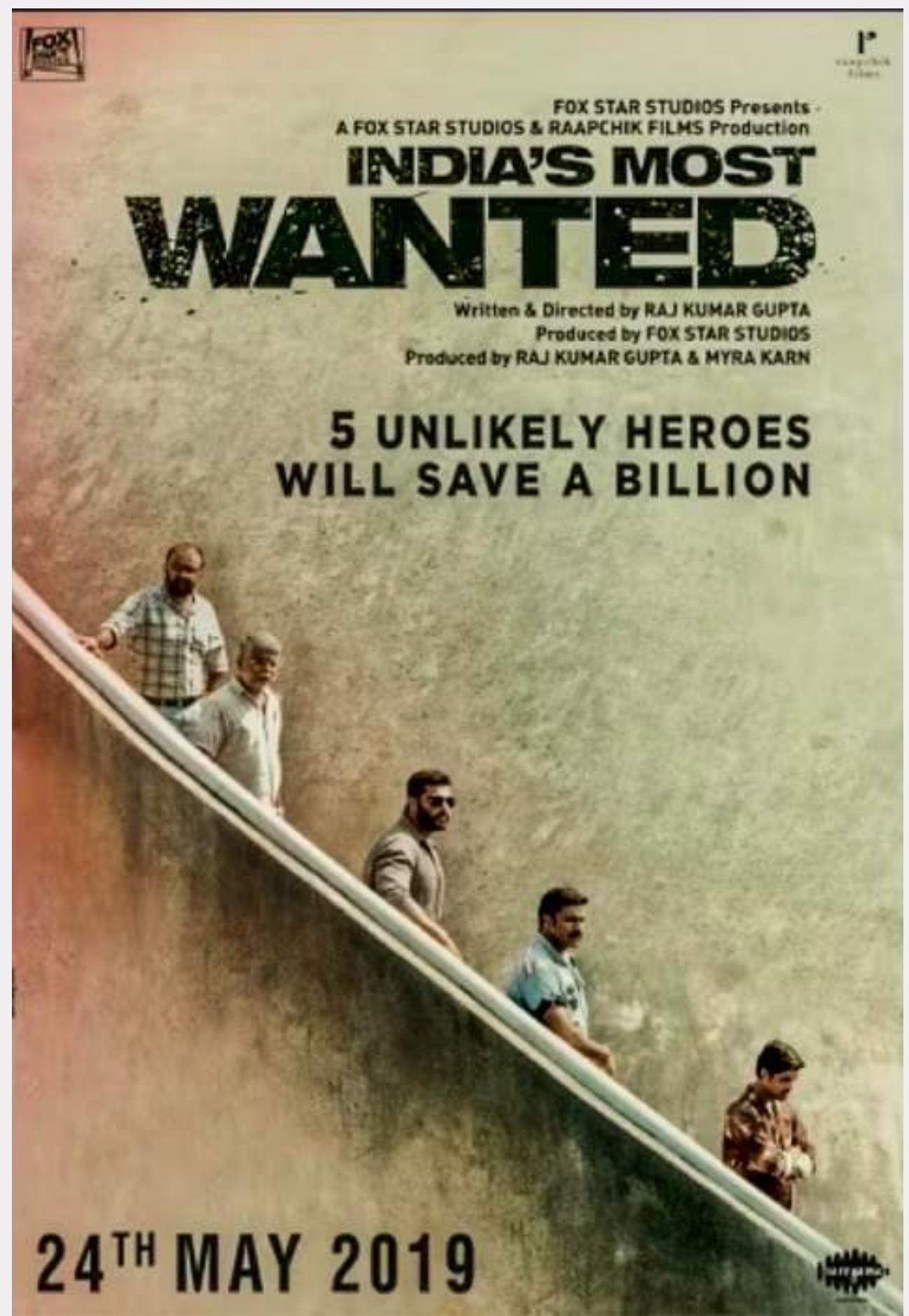
अचल मिश्रा की फिल्म 'धुईन' मैथिली में बनी थी, और इसकी अधिकांश शूटिंग दरभंगा और आस-पास के क्षेत्रों में हुई थी। दरभंगा रेलवे स्टेशन फिल्म के एक महत्वपूर्ण चरित्र के रूप में फिल्म में दिखता है। यह फिल्म कांस में भारत की ओर से आफिशियल इंट्री के रूप में प्रदर्शित की गई थी।



सामंतर

नीरज कुमार मिश्रा की फिल्म समानांतर 2021 के राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार के अंतर्गत सर्वश्रेष्ठ मैथिली फिल्म के पुरस्कार से सम्मानित की गई। इस फिल्म की अधिकांश शूटिंग सहरसा शहर के वीर कुंवर सिंह चौक, गंगजला चौक, पंचवटी, कलेक्ट्रेट रोड, हवाई अड्डा, बलुआहा पुल के अलावा सुपौल व अररिया जिले में नेपाल के सीमावर्ती क्षेत्र में की गई थी।





इंडियाज मोस्ट वॉन्टेड

अर्जुन कपूर अभिनीत इंडियाज मोस्ट वॉन्टेड में बिहार की झलक कहानी को एक नया मोड़ देती है। 2019 में रिलीज इस फिल्म का निर्देशन राजकुमार गुप्ता ने किया था। इस फिल्म की शूटिंग पटना के गोलघर, काली घाट, एन.आइ.टी घाट, कारगिल चौक और बहादुर हाउसिंग कालोनी में हुई थी। उल्लेखनीय है कि फिल्म की शूटिंग के लिए अधिकांश मुख्य पात्र गोलघर के ऊपर चढ़े थे, जिसे फिल्म के पोस्टर में भी प्रमुखता से दिखाया गया था। शूटिंग के बाद अर्जुन कपूर ने अपने एक साक्षात्कार में बिहार को शूटिंग के लिए आदर्श स्थान बताया था।

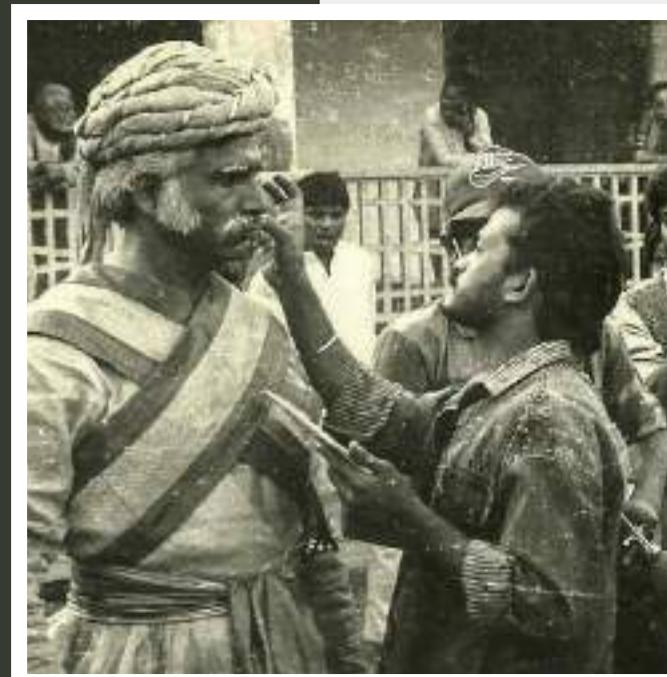
टेलीविजन धारावाहिकों में बिहार



धारावाहिक में बिहार

बिहार में कुछ महत्वपूर्ण धारावाहिकों की भी शूटिंग हुई है। इसमें दूरदर्शन के लिए अशोक तलवार के निर्देशन में फणीश्वर नाथ रेणु की अमरकृति 'मैला आंचल' पर इसी शीर्षक से बनी धारावाहिक, जिसकी शूटिंग पूर्णियां के साथ रघुनाथपुर और चंपानगर में हुई थी। दूरदर्शन के लिए ही प्रकाश झा ने बाबू कुंवर सिंह के जीवन पर धारावाहिक विद्रोह का निर्माण किया था, जिसकी शूटिंग बेतिया, बगहा, बाल्मीकीनगर के आसपास हुई थी। फिल्म में अधिकांश अभिनेता और तकनीशियन भी बिहार से थे।

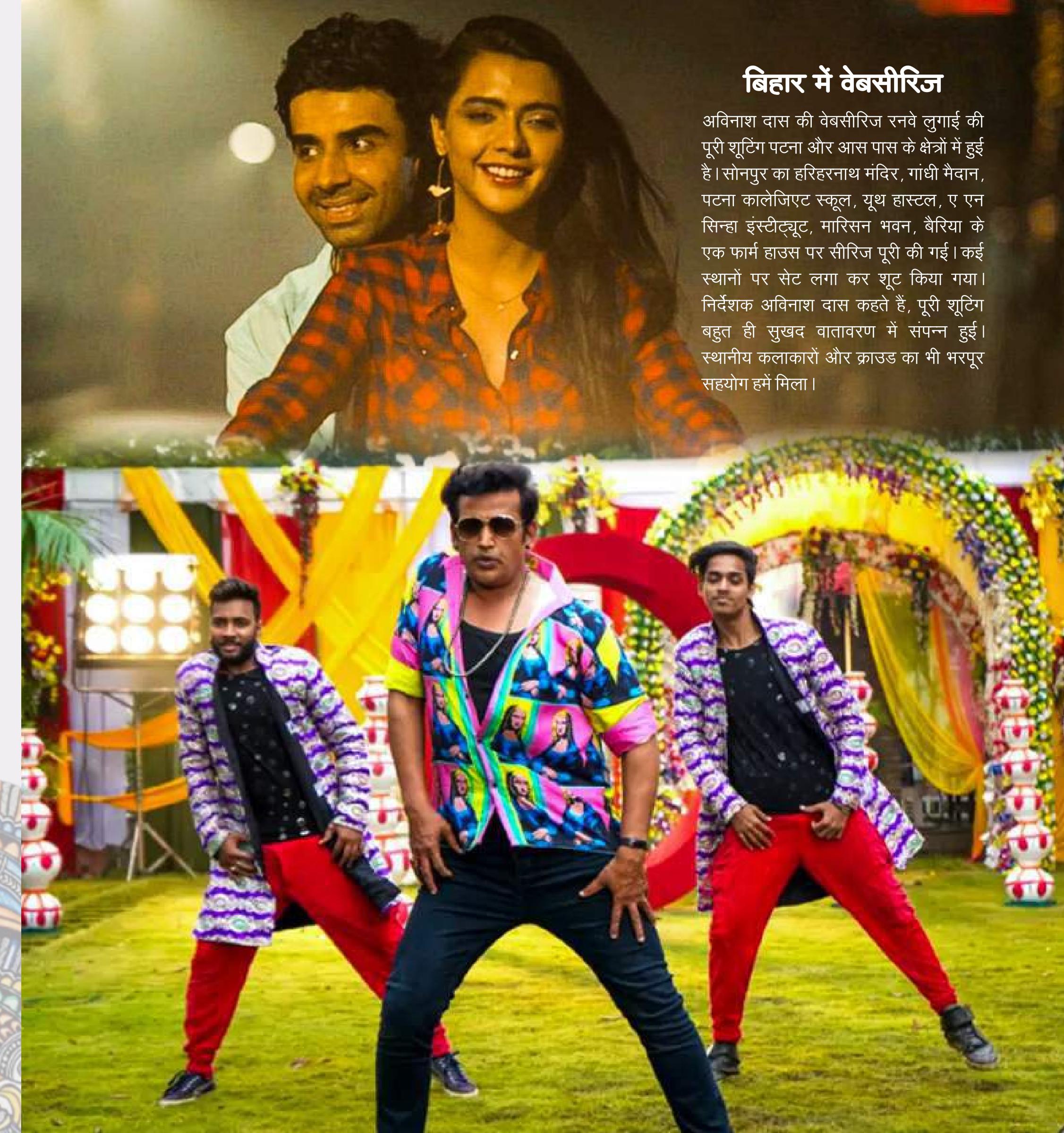
विद्रोह



बिहार में वेबसीरिज

अविनाश दास की वेबसीरिज रनवे लुगाई की पूरी शूटिंग पटना और आस पास के क्षेत्रों में हुई है। सोनपुर का हरिहरनाथ मंदिर, गांधी मैदान, पटना कालेजिएट स्कूल, यूथ हास्टल, ए एन सिन्हा इंस्टीट्यूट, मारिसन भवन, बैरिया के एक फार्म हाउस पर सीरिज पूरी की गई। कई स्थानों पर सेट लगा कर शूट किया गया। निर्देशक अविनाश दास कहते हैं, पूरी शूटिंग बहुत ही सुखद वातावरण में संपन्न हुई। स्थानीय कलाकारों और क्राउड का भी भरपूर सहयोग हमें मिला।

वेबसीरीज में बिहार





**अछूते लोकेशनों और संस्कृति के साथ
स्वागत को तत्पर बिहार**



 घोड़ा कटोरा, राजगीर



 उमगा मंदिर, औरंगाबाद





गंगा डॉल्फन अभ्यारण्य, विक्रमशिला



बिदेशिया नाच, बिहार



राजनगर पैलेस, मधुबनी



नवलखा पैलेस, राजनगर



तेलहार कुंड, कैमूर



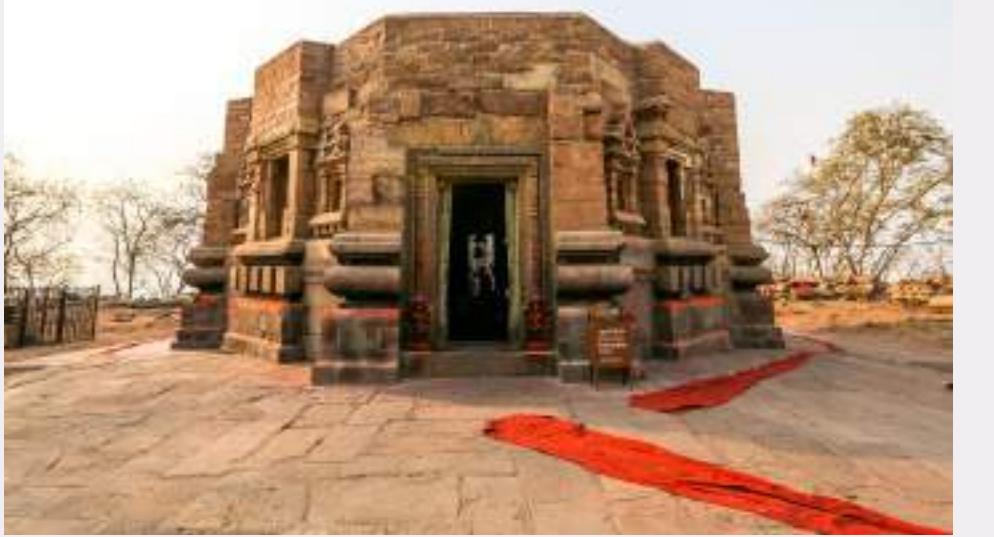
हजरत मखदूम दरगाह, गया



करकटगढ़, कैमूर



 मुंडेश्वरी मंदिर, कैमूर



 तुतला भवानी झरना, रोहतास



 दशरथ माङडी रोड, गया



 रोहतास गढ़ किला, रोहतास



 पदरी की हवेली, पटना सिटी





 निर्माण जापानी मंदिर, बोधगया

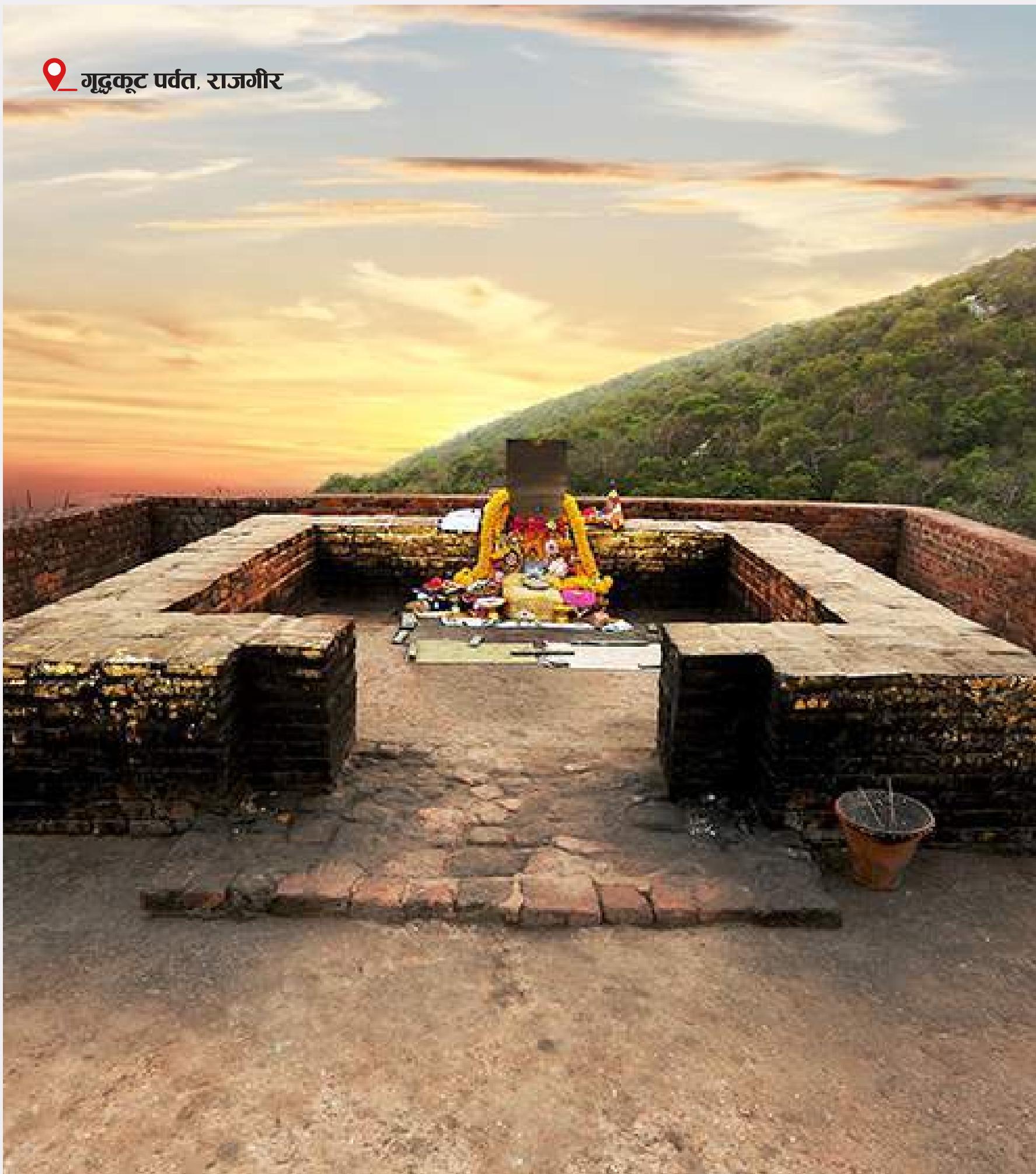


 मनियार मठ, राजगीर



 परिवहन भवन, पटना

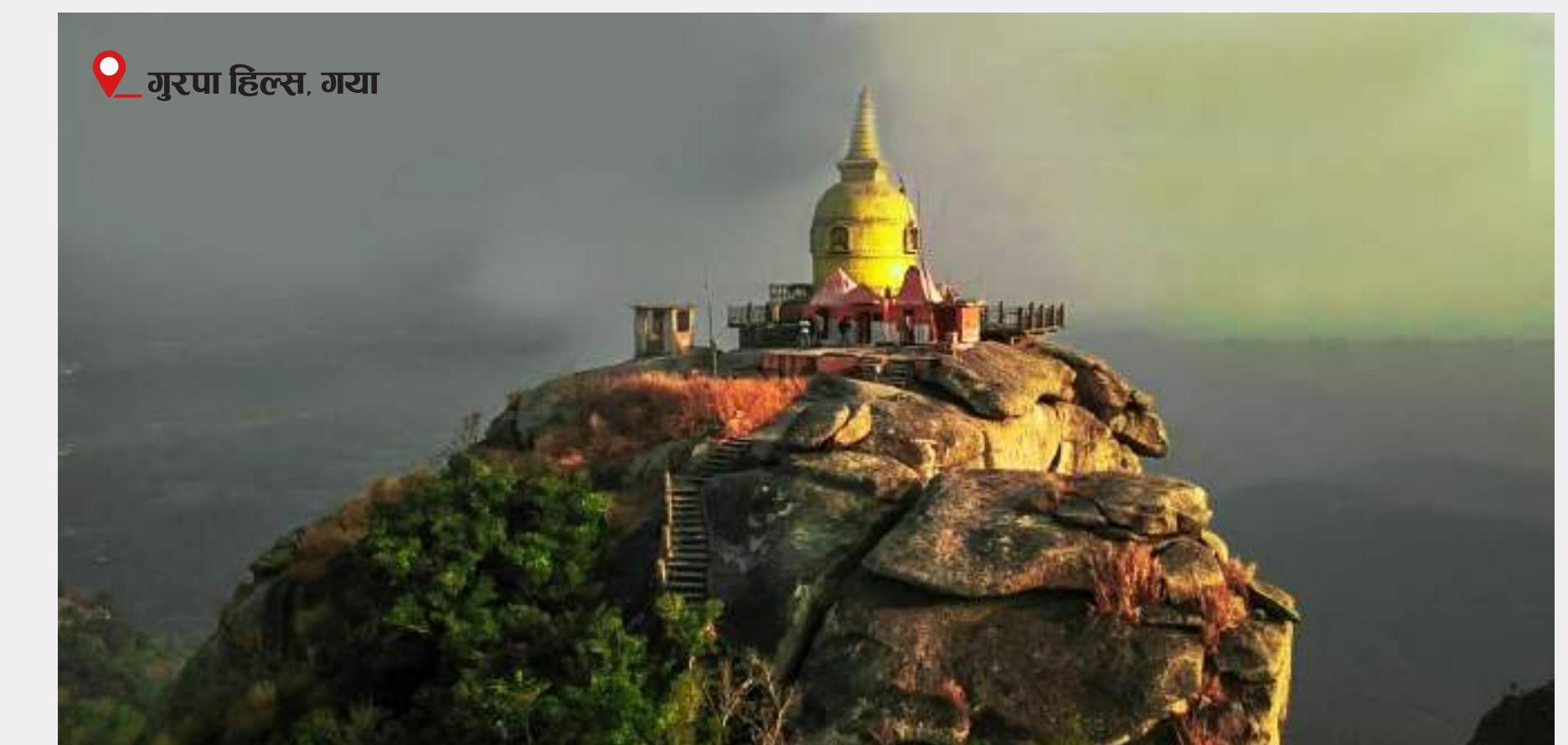




गृद्धकूट पर्वत, राजगीर



वाल्मीकि नगर टाइगर रिजर्व, पश्चिमी घम्पारण



गुरपा हिल्स, गया

 शेरशाह सूरी का मकबरा, सासाराम



 ग्लास ब्रिज, राजगीर



 महाबोधी मंदिर, बोधगया



 बुद्ध स्मृति पार्क, पटना



 शेरशाह सूरी मकबरा, सासाराम



 बहमयोनी मंदिर, बोधगया



 सामा-चकेवा लोकनृत्य, बिहार

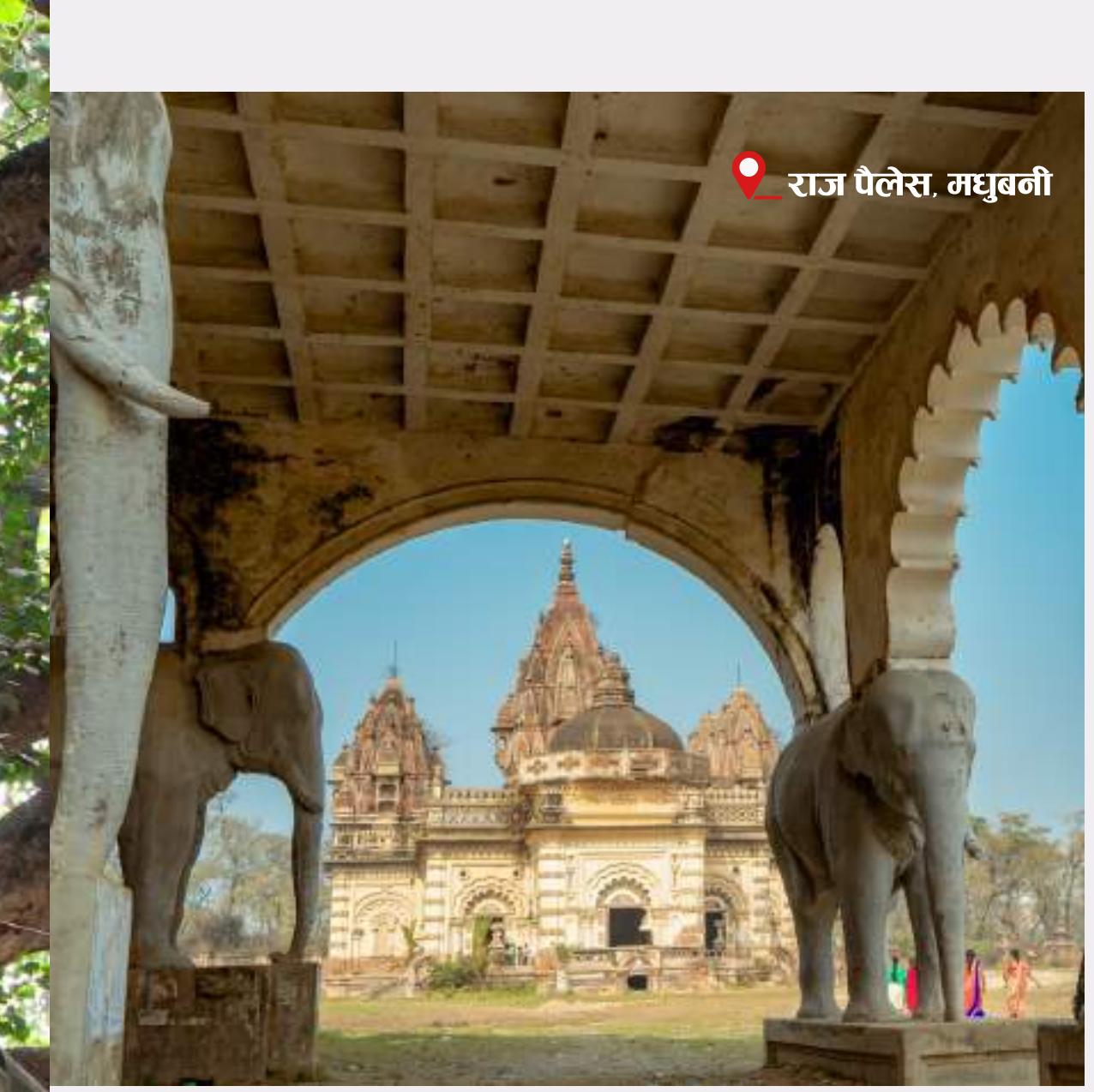


 मधुबनी पेंटिंग बनाती महिलाएं



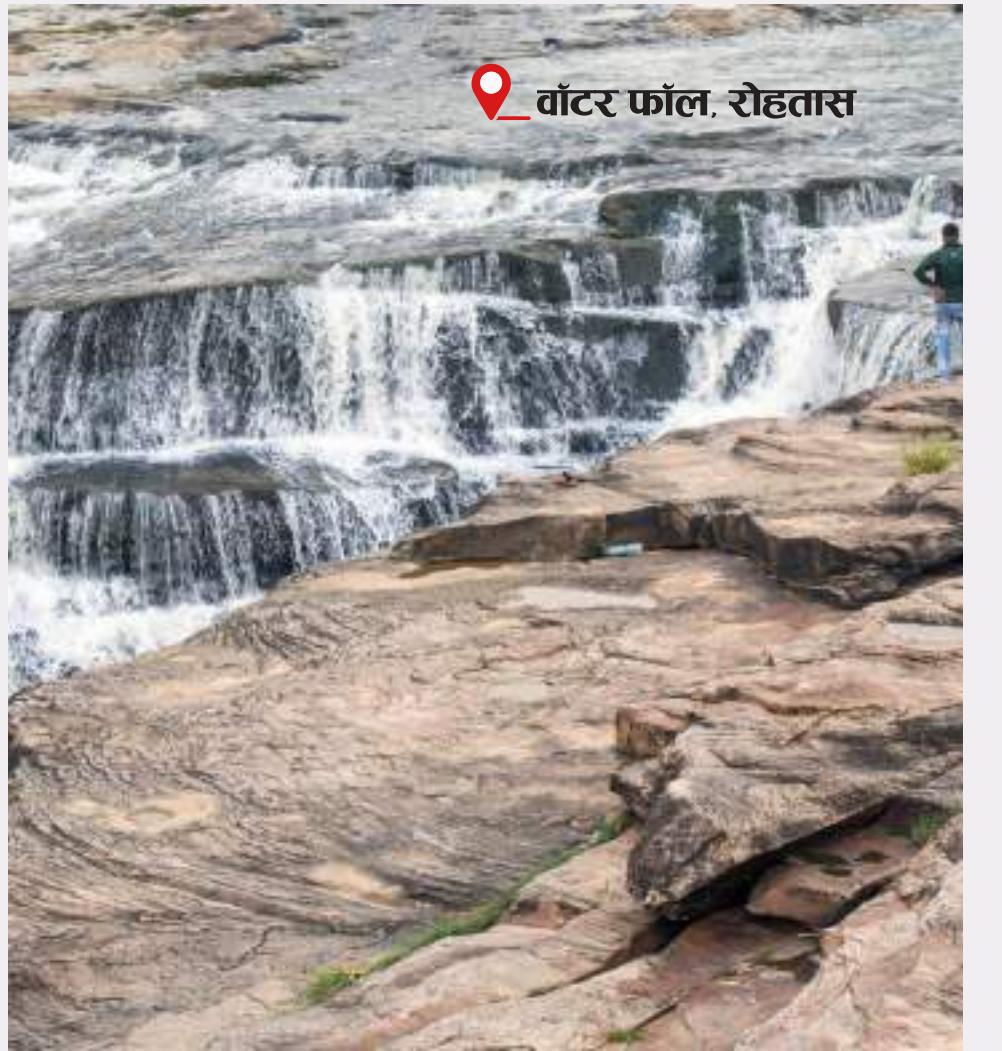
 छठ पूजा, बिहार







जैन मंदिर, बांका



गॉटर फॉल, रोहतास



राजनगर पैलेस, मधुबनी



मंदार हिल रोपवे, बांका

📍 बापू सभागार, पटना



📍 सलीम शाह सूरी का मकबरा, सासाराम



📍 रोहतास किला, रोहतास



📍 दुर्गावती जलाशय, कैम्बूर



📍 विश्व शांति स्तूप, राजगीर



जल मंदिर, नालंदा



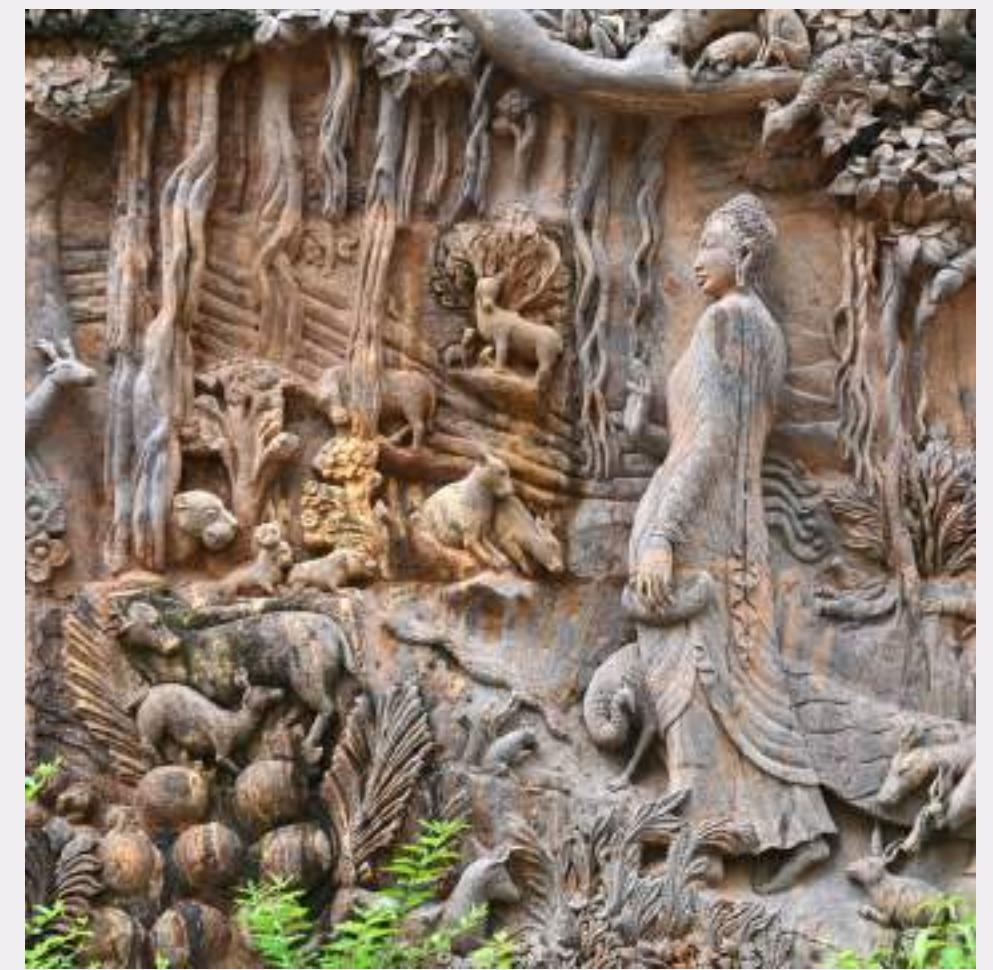
बराबर गुफाएं, जहानाबाद



थाई मंदिर, नालंदा



महाबोधी मंदिर परिसर, बोधगया





📍 कैमर हिल्स, कैमर



📍 मनेर शरीफ, पटना



📍 तीरायतन, नालंदा



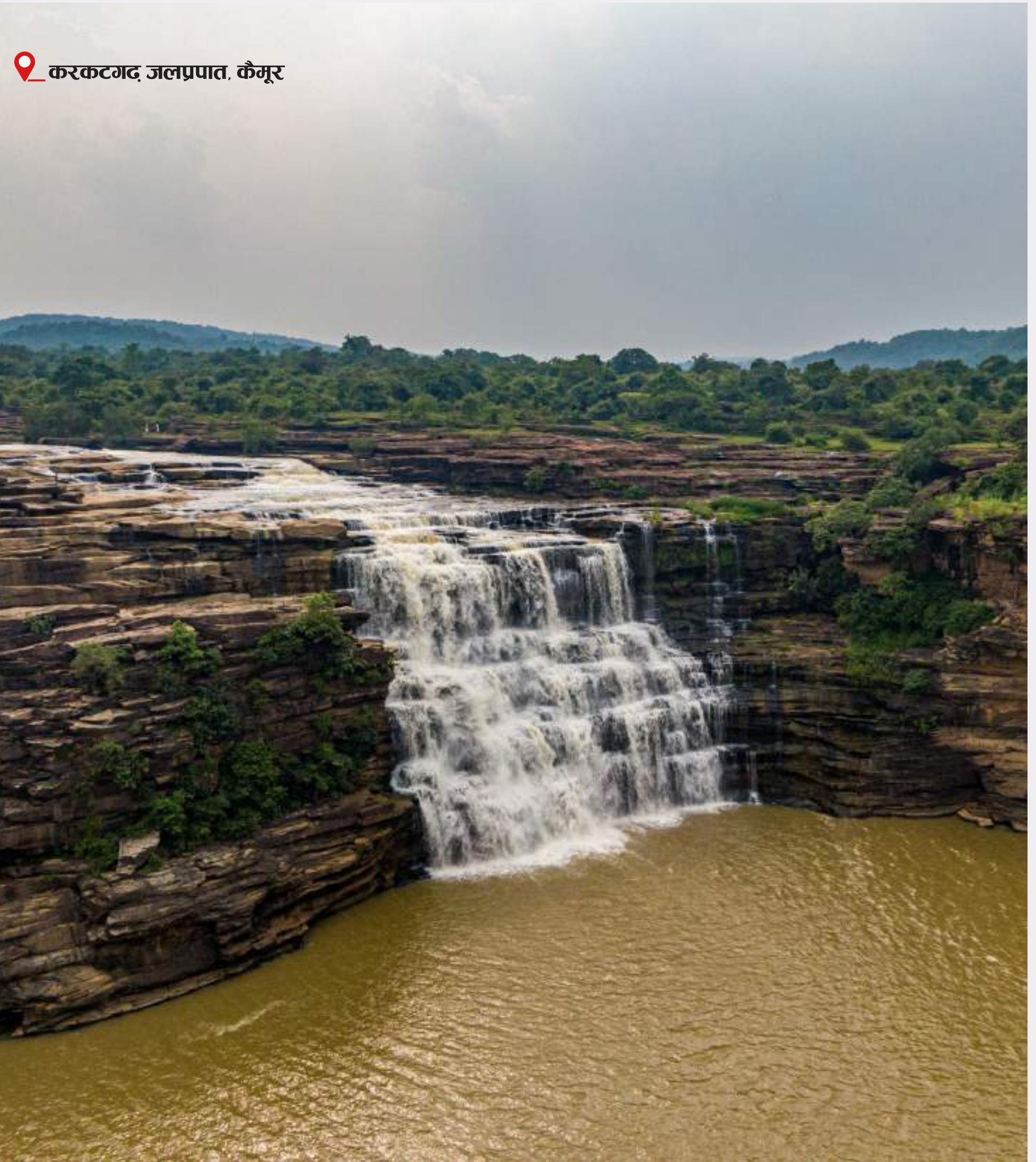
📍 प्रकाश पुंजा, पटना



📍 माया सरोवर, बोधगया



📍 इंद्रपुरी बांध, रोहतास



करकटगढ़ जलप्रपात, कैमूर



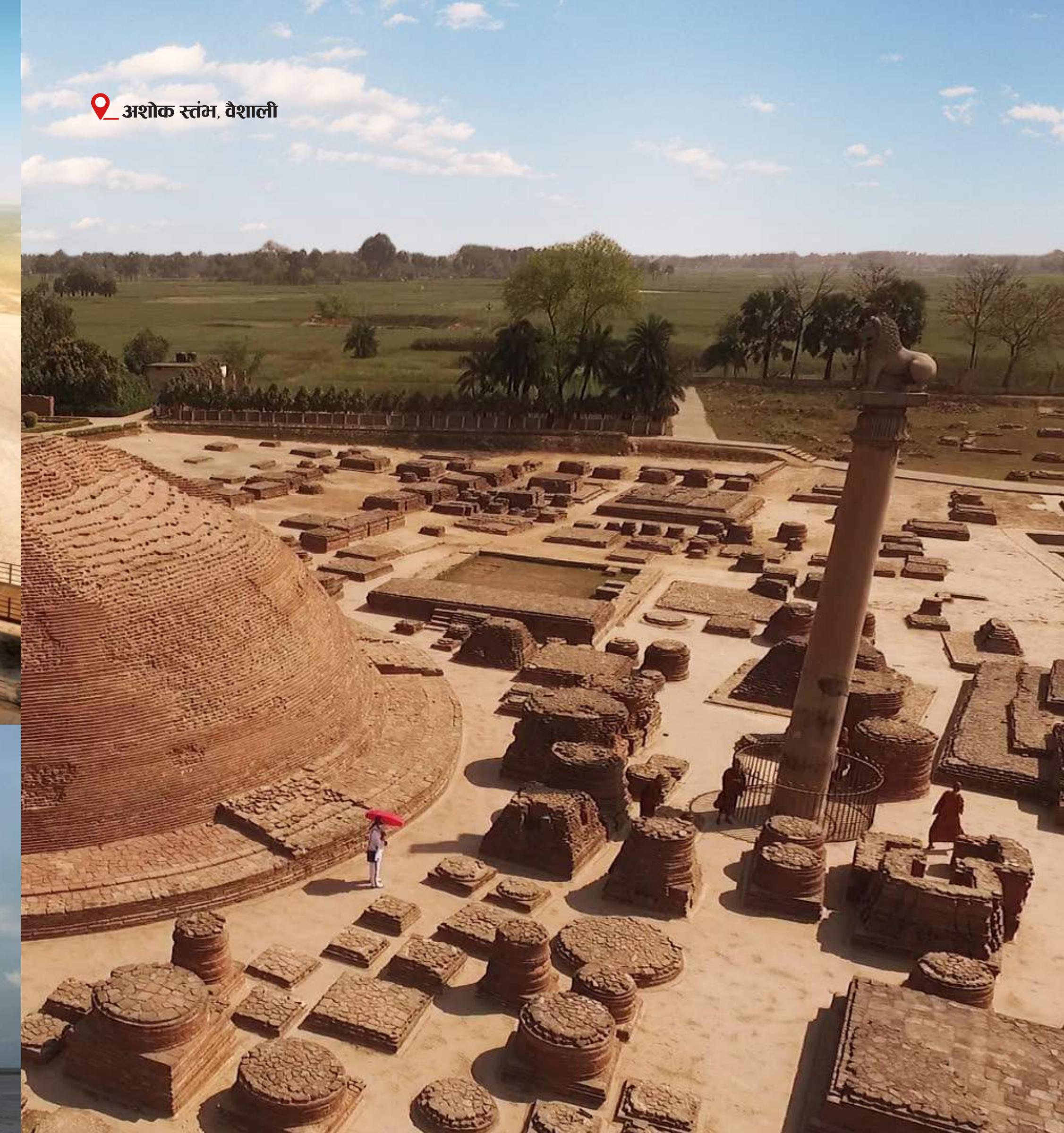
शाईलेंड मंदिर, बोधगया



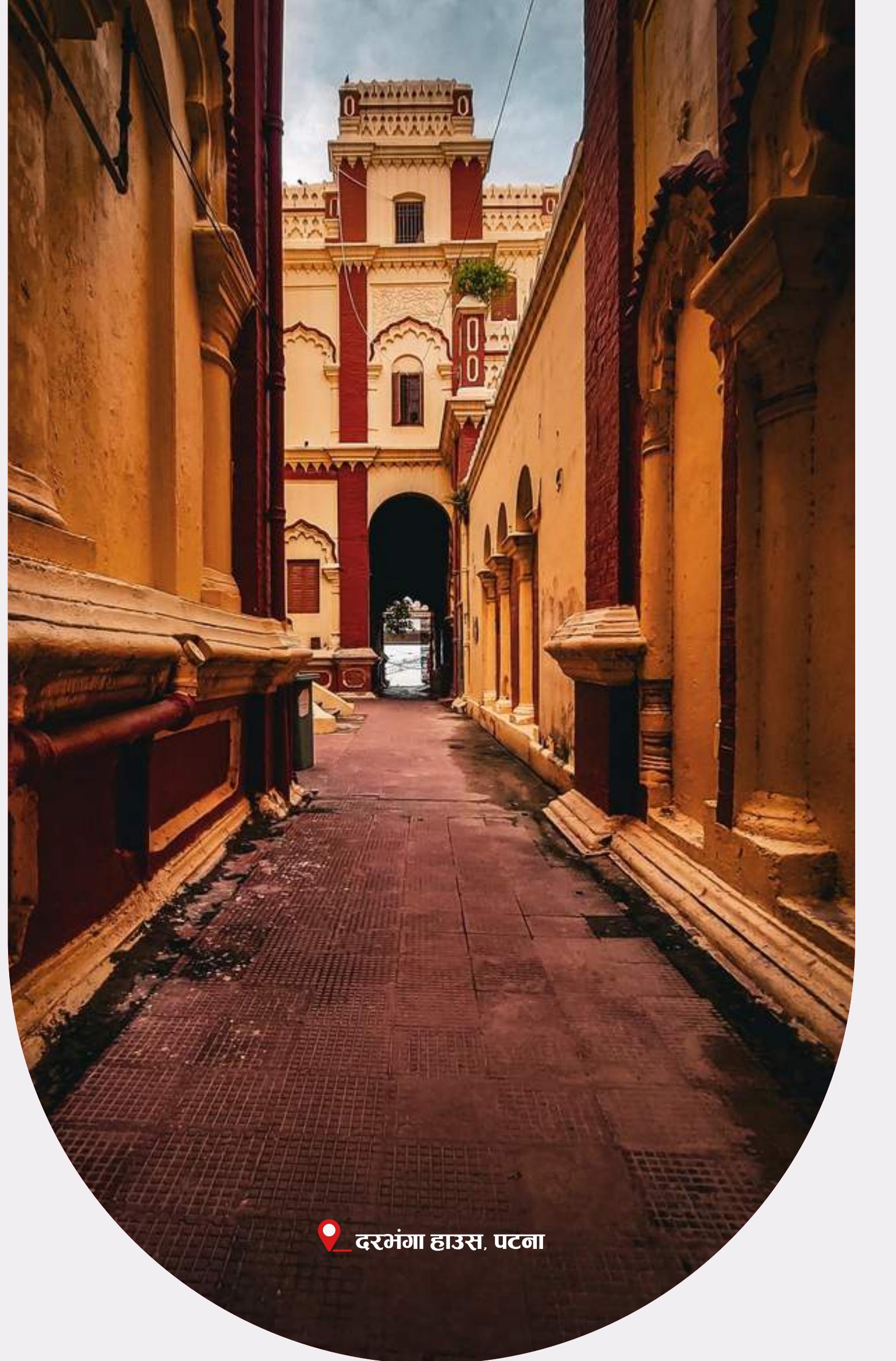
पीपा पुल, दानापुर



गांधी सेतू, पटना



अशोक स्तंभ, वैशाली





पटना कॉलेज, पटना



पटना कॉलेज, पटना

